नए नियम के अनुसार

(रेडियो प्रवचन)

लेखक :
सनी डेविड

सत्य सुसमाचार रेडियो संदेशमाला

प्रकाशक :
मसीह् की कलीसिया
बॉक्स नं० ३८१५
नई दिल्ली-११००४६

प्रथम संस्करण १९८०

मुद्रक :
प्रिन्ट इण्डिया,
मायापुरी, दिल्ली

ACCORDING TO THE NEW TESTAMENT

TEN RADIO SERMONS IN HINDI

By SUNNY DAVID

First Printing 1980

Published by :

Church of Christ

Post Box 3815

NEW DELHI-110049

CONTENTS

1.	Count them not little	1
2.	Some hard sayings	6
3.	Successful, but unsuccessful	12
4.	Christ is our peace	18
5.	Christ, our Advocate and the propitiation for our sins	24
6.	Blessed in Christ	29
7.	Victory over death	34
8.	What does the Scriptures teach about Resurrection ?	40
9.	Why should we believe the Bible to be the word of God ?	46
10.	Why did God forsake His Son ?	52

परिचय

प्रस्तुत पुस्तक में प्रवचन नए नियम पर आधारित हैं। बाइबल के इस दूसरे हिस्से का महत्व हमारे जीवनों में बड़ा ही महान है, क्योंकि इसमें हम मसीह के नियम, उसके सुसमाचार, मसीहीयत, कलीसिया, इत्यादि, उन विशेष बातों के बारे में पढ़ते हैं जिनका सम्बन्ध हमारी आत्मा से है।

सच्चाई वास्तव में बड़ी ही साधारण तथा सरल है, किन्तु उनके लिए जो उसे ढूँढ़ते और मानते हैं। मसीह यीशु के अनुसार, हमें पवित्र शास्त्र में से ढूँढ़ना चाहिए। (यूहन्ना ५ : ३९)। उसने यह भी कहा, कि परमेश्वर का वचन ही सत्य है, (यूहन्ना १७ : १७), तथा वही हमें स्वतंत्र करता है। (यूहन्ना ८ : ३२)। फिर, प्रेरित पौलुस के अनुसार, हम देखते हैं, कि परमेश्वर के वचन का हमें अध्ययन करना चाहिए (२ तीमुथियुस २ : १५), तथा वह हमें प्रत्येक भले काम के लिए सिद्ध बनाता है। (२ तीमुथियुस ३ : १६, १७)। याकूब कहता है, कि नया नियम स्वतंत्रता की सिद्ध व्यवस्था है, (याकूब– १ : २५), और यह, कि हमें वचन पर चलनेवाला बनना चाहिए। पतरस के कथनानुसार, प्रभु ने सब कुछ जो जीवन और भक्ति से सम्बन्ध रखता है, हमें उसी की पहचान के द्वारा दिया है (२ पतरस १ : ३) और हम सत्य को मानने से अपने मनों को पवित्र करते हैं। (१ पतरस १ : २२)।

भाई सनी डेविड द्वारा लिखित इन प्रवचनों को पुस्तक के रूप में छपवाकर पाठकों तक इसलिये पहुँचाया जा रहा है ताकि आप गूढ़ता के साथ इनका अध्ययन करें। इस बात का भी ध्यान रखा गया है, कि ये प्रवचन आप के पास उसी प्रकार पहुँचें जैसे कि

इनका प्रसारण रेडियो पर हुआ है। हमारी आशा है कि जबकि आप इन्हें पढ़ते हैं तो आप यह अनुभव कर सकें कि हमारे प्रयत्न का उद्देश्य आपका ध्यान परमेश्वर के वचन की सच्चाई पर दिलाना है। हमारा विश्वास है, कि स्वर्ग और पृथ्वी पर सारा अधिकार मसीह के पास हैं, इसलिए धार्मिक दृष्टिकोण से वचन या काम से हम जो कुछ भी करते हैं वह सब अवश्य ही मसीह के वचनानुसार ही होना चाहिए। और हमारा आपसे आग्रह है कि आप भी ऐसा ही करें।

इस विषय में यदि हम आपकी कोई सहायता कर सकते हैं, यदि हम आपके प्रश्नों के उत्तर दे सकते हैं, या प्रभु की आज्ञापालन करने में आपकी कोई सहायता कर सकते हैं, तो हमारा निवेदन है कि आप हमें सूचित करें।

इन्हीं शब्दों के साथ, अब मैं आपको लेखक के इन प्रवचनों को पढ़ने के लिये आमन्त्रित करता हूं।

जे० सी० चोट
मसीह की कलीसिया
नई दिल्ली

भूमिका

आज से लगभग पाँच वर्ष पूर्व, मार्च १९७५ में, "सत्य सुसमाचार" रेडियो कार्यक्रम का आरम्भ हुआ था। तब से लेकर अब तक इस कार्यक्रम के लिए मैंने १९२ प्रवचनों को लिखा है। उन्हीं एक-सौ-बानवे प्रवचनों में सम्मिलित "नए नियम के अनुसार" ये दस प्रवचन भी हैं। प्रस्तुत पुस्तक में प्रत्येक पाठ को नए नियम से लिया गया है, और हर एक पाठ का अपना ही एक विषय है। मेरी आशा और संकल्प है, कि यदि परमेश्वर ने चाहा और उसकी इच्छा हुई तो भविष्य में इसी प्रकार सत्य सुसमाचार संदेशमाला में मैं निरन्तर नए मोती जोड़ता रहूंगा। परमेश्वर की स्तुति हो।

मेरे अन्य प्रवचनों की तरह, "नए नियम के अनुसार" इन प्रवचनों को भी पुस्तक का रूप देने में हमारा प्रमुख उद्देश्य यही हैं, कि न केवल ये प्रवचन रेडियो द्वारा ही सुने जा सकें परन्तु पुस्तक के रूप में होकर आपके पुस्तकालय या घर में भी विद्यमान रहें, ताकि आप इन्हें बार-बार पढ़ सकें। मेरी आशा है, कि इन प्रवचनों को न केवल स्वयं आप ही पढ़ेंगे, परन्तु अपने परिवार के सदस्यों तथा अपने मित्रों इत्यादि को भी इनके बारे में बताएगे। इन प्रवचनों में मैंने मनुष्य की आत्मा के महत्व और परमेश्वर के प्रति मनुष्य के कर्त्तव्य को दिखाने का प्रयत्न किया हैं। तौभी, मैं जानता हूं कि वे सभी लोग जो इस पुस्तक को पढ़ेंगे, उनमें से हर एक इसमें लिखी बातों को स्वीकार नहीं करेगा। किन्तु मेरा विश्वास है, कि पाठकों में कुछ ऐसे लोग भी मौजूद हैं जिनका मन उन तीन हज़ार लोगों की तरह हैं, जिनके बारे में हम नए नियम में पढ़ते हैं, कि जब उन्होंने प्रेरितों से यीशु का सुसमाचार सुना, तो उनके हृदय

छिद गए, और वे पतरस और शेष प्रेरितों से पूछने लगे, कि हे भाईयो हम क्या करें ? (प्रेरितों २:३७)।

यदि इन पाठों को पढ़कर आपके हृदय में बदलाव आता है, और आप परमेश्वर के पुत्र यीशु पर विश्वास लाते हैं, तथा उसके सुसमाचार की आज्ञाओं को पालन करके अपनी आत्मा को बचाने का निश्चय करते हैं, तो मेरे परिश्रम का इससे बढ़कर और कोई प्रतिफल मुझे नहीं मिल मकता। इस सम्बन्ध में यदि आप लेखक को सूचित करेंगे तो उसे अपार प्रसन्नता होगी।

इन्हीं शब्दों के साथ, प्रार्थना तथा निवेदन सहित, अब मैं आपको इस पुस्तक को पढ़ने का निमन्त्रण देता हूं।

—लेखक

लेखक की अन्य उपलब्ध रचनाएँ

१५ प्रभावशाली रेडियो प्रवचन
२० लघु रेडियो संदेश
मुक्ति के संदेश
हम किसके पास जाएं?
यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे…
जीवन के वचन
मसीही संदेश
सुसमाचार बोनेवाला (अनुवादित)
पुराने नियम के अनुसार

रेडियो प्रोग्राम गाईड

आत्म-शान्ति प्राप्त करने तथा परमेश्वर की इच्छा को जानने के लिए सुनिए लोकप्रिय रेडियो कार्यक्रम सत्य-सुसमाचार !

प्रत्येक :

मंगलवार —: रात ९ बजे
बृहस्पतिवार —: रात ९ बजे
शुक्रवार —: रात ९ बजे
रविवार —: दिन में १.३० बजे

प्रचारक :
सनी डेविड

ये कार्यक्रम रेडियो श्री लंका द्वारा प्रसारित किए जा रहे हैं।

पाठों की सूची

१. आप उन्हें छोटी न जानिए ! १
२. कुछ नागवार बातें ६
३. सफ़ल, परन्तु असफ़ल ! १२
४. मसीह हमारा मेल है १८
५. यीशु, हमारा सहायक और हमारे पापों का प्रायश्चित २४
६. मसीह में धन्य २६
७. मृत्यु पर विजय ३४
८. पुनरुत्थान के विषय में पवित्र शास्त्र क्या सिखाता है ? ४०
९. हमें क्यों विश्वास करना चाहिए कि बाइबल परमेश्वर का वचन है ? ४६
१०. परमेश्वर ने अपने पुत्र को क्यों छोड़ दिया ? ५२

आप उन्हें छोटा न जानिए !

मित्रो :

परमेश्वर का धन्यवाद हो। वास्तव में यह समय हमारे जीवनों में कितना अधिक मूल्यवान होता है जबकि हम अपने मनों को उसके वचन की ओर लगाते हैं। मेरा विश्वास है, कि आप सब हमेशा की तरह आज भी इन बातों पर बड़ी ही गम्भीरता के साथ विचार करेंगे जिन्हें हम अभी देखने जा रहे हैं। निसंदेह, यह तो आप सभी जानते हैं कि इस कार्यक्रम में हम परमेश्वर के पवित्र वचन, अर्थात पवित्र बाइबल का अध्ययन करते हैं। आज हम अपने पाठ में बाइबल में से यूहन्ना के सुसमाचार की पुस्तक के छठे अध्याय में से देखेंगे।

यहां, इस अध्याय में, हम लोगों की एक बहुत बड़ी भीड़ को प्रभु यीशु ममीह के साथ देखते हैं। हम पढ़ते हैं, कि यह भीड़ यीशु के आश्चर्य-कर्मों को देखकर उसके पीछे हो ली थी। किन्तु क्योंकि वह समय दोपहर के भोजन करने का था, सो यीशु ने अपने एक चेले से उन लोगों के लिये भोजन की व्यवस्था करने को कहा। किन्तु वह चेला यीशु की यह बात सुनकर बड़ा ही चकित हुआ, क्योंकि भीड़ में लोगों की गिनती लगभग पाँच हज़ार की थी। वे लोग गरीब थे, सो न तो उनके पास पैसा था कि इतने लोगों के लिए भोजन मोल ला सकें; और यदि होता भी, तो इतने ढेर लोगों के लिए एकाएक भोजन का प्रबन्ध करना असम्भव था। परन्तु, हम पढ़ते हैं, कि तभी यीशु को पता चला कि भीड़ में एक लड़का है जिसके पास जव की पाँच रोटियां और दो मछलियाँ हैं। कदा-चित सुबह अपने घर से काम पर जाते हुए यह भोजन उसने अपने साथ ले लिया होगा। किन्तु चेलों ने यीशु से कहा, कि इतने थोड़े से भोजन से क्या हो सकता है ? पर यीशु ने उनसे कहा, कि लोगों को घास पर

बैठा दो। और जब वे बैठ गए, तो यीशु ने उस मुट्ठी भर भोजन को उस लड़के के हाथ से ले लिया। सारे लोगों की आँखें अब यीशु की ओर लगी थीं, और वे आश्चर्य में डूबकर यीशु की ओर देख रहे थे। तब यीशु ने उस भोजन के लिए परमेश्वर को धन्यवाद दिया, और फिर अपने चेलों की सहायता से उसे सब लोगों को बंटवा दिया। सभी लोग बड़े आश्चर्य चकित थे। क्योंकि उन में से हर एक के आगे इतना अधिक भोजन रखा था, कि लिखा है, कि वे सब खाकर तृप्त हो गए! और न केवल यह, परन्तु जब वे सब खा चुके, तो यीशु ने अपने चेलों को आज्ञा देकर कहा, कि अब बचे हुए भोजन के सब टुकड़ों को बटोर लो, कि कुछ फेंका न जाए। और, मित्रो हम पढ़ते हैं, कि जब उन्होंने उन बचे हुए टुकड़ों को बटोरा, तो वे इतने अधिक थे कि उनसे बारह टोकरियाँ भर गईं। यीशु के इस आश्चर्यकर्म को देखकर लोगों के आश्चर्य की सीमा न रही।

परन्तु, अब आईये, हम यह देखें कि इन बातों से आज हम क्या सीखते हैं। क्योंकि यदि परमेश्वर ने इन बातों को अपने वचन में लिखवाया है, तो उसका अभिप्राय यही है कि इन से हमें शिक्षा मिले। सबसे पहिले तो इस वर्णन से हम यह सीखते हैं, कि यीशु एक ऐसा मनुष्य था जो दूसरों की चिन्ता किया करता था। उसे उन लोगों की फ़िकर थी। वह उन्हें भोजन खिलाना चाहता था। क्योंकि वे भूखे थे। मित्रो, क्या हम भी यीशु की तरह अन्य लोगों की चिन्ता करते हैं? जब हम उन्हें आवश्यकता में देखते हैं, तो क्या हम उनकी सहायता करते हैं? प्रभु यीशु ने एक जगह कहा, कि जब वह पृथ्वी के सारे लोगों का न्याय करने को एक दिन आएगा, तो सभी मनुष्य उसके सामने खड़े होंगे। कुछ उसकी दाईं ओर, और बाकी सब उसकी बाईं ओर। और फिर लिखा है, कि तब वह अपनी दाहिनी ओर वालों से कहेगा, कि, "हे मेरे पिता के धन्य लोगो, आओ, उस राज्य के अधिकारी हो जाओ, जो जगत के आदि से तुम्हारे लिये तैयार किया हुआ है। क्योंकि मैं भूखा था, और

तुम ने मुझे खाने को दिया; मैं पियासा था, और तुमने मुझे पानी पिलाया; मैं परदेशी था, तुमने मुझे अपने घर में ठहराया। मैं नंगा था, तुमने मुझे कपड़े पहिनाए; मैं बीमार था, तुमने मेरी सुधि ली; मैं बन्दीगृह में था, तुम मुझ से मिलने आए। तब धर्मी उसको उत्तर देंगे, कि हे प्रभु, हम ने कब तुझे भूखा देखा और खिलाया? या पियासा देखा, और पिलाया? हम ने कब तुझे परदेशी देखा और अपने घर में ठहराया, या नंगा देखा और कपड़े पहिनाए? हमने कब तुझे बीमार या बन्दीगृह में देखा और तुझ से मिलने आए?" प्रभु ने कहा, कि मैं तब उन से कहूंगा, कि "मैं तुम से सच कहता हूं, कि तुमने जो मेरे इन छोटे से छोटे भाईयों में से किसी एक के साथ किया, वह मेरे ही साथ किया।" और, फिर हम देखते हैं, कि लिखा है, तब वह अपनी बाईं ओर वालों से कहेगा, कि, "हे श्रापित लोगो, मेरे सामने से उस अनन्त आग में चले जाओ, जो शैतान और उसके दूतों के लिए तैयार की गई है। क्योंकि मैं भूखा था, और तुम ने मुझे खाने को नहीं दिया; मैं पियासा था, और तुम ने मुझे पानी नहीं पिलाया। मैं परदेशी था, और तुम ने मुझे अपने घर में नहीं ठहराया; मैं नंगा था, और तुम ने मुझे कपड़े नहीं पहिनाए, बीमार और बन्दीगृह में था, और तुमने मेरी सुधि न ली। तब वे उत्तर देंगे, कि हे प्रभु, हम ने तुझे कब भूखा, या पियासा, या परदेशी, या नंगा, या बीमार, या बन्दीगृह में देखा, और तेरी सेवा टहल न की? तब वह उन्हें उत्तर देगा, मैं तुम से सच कहता हूं, कि तुम ने जो इन छोटे से छोटों में से किसी एक के साथ नहीं किया, वह मेरे साथ भी नहीं किया। और यह अनन्त दन्ड भोगेंगे, परन्तु धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे।" (मत्ती २५ : ३१ -४६)। सो हम देखते हैं, मित्रो, कि परमेश्वर चाहता है कि हम एक दूसरे कि चिन्ता करें और एक दूसरे की सहायता करें। क्योंकि यदि हम उसके बनाए हुए लोगों से प्रेम नहीं रखते तो हम उस से भी प्रेम नहीं रखते जिसने उन्हें बनाया है। और इस बात को हम प्रभु यीशु मसीह के जीवन से सीखते हैं। जैसा कि

अभी हम ने देखा, कि जब उसने लोगों की उस भूखी भीड़ को देखा, तो उसे उन पर तरस आया, और उसने उन्हें खाने को दिया।

परन्तु अपने पाठ से हम यह भी सीखते हैं, कि वह लड़का जिसके पास वह थोड़ा सा ही भोजन था, जो कदाचित स्वयं उसी के लिये पर्याप्त था, उसे यीशु को देने को तैयार था। उसने यह नहीं कहा, कि यह तो ज़रा सा है, इस से क्या हो सकता है; यदि मैं इसे यीशु को दे दूंगा तो मेरा क्या होगा; मैं तो भूखा रह जाऊँगा। नहीं, उसने ऐसा नहीं सोचा मित्रो! परन्तु जो कुछ भी थोड़ा-सा उसके पास था उसने वही यीशु को दे दिया। और हम देखते हैं, कि जब यीशु ने उसे ले लिया तो न केवल वह लड़का परन्तु उस भीड़ में प्रत्येक मनुष्य उसे खाकर तृप्त हो गया। मित्रो, शायद आज आपके पास जो कुछ भी हो वह बिल्कुल थोड़ा सा ही हो। कदाचित् आज आपके पास थोड़ी सी ही योग्यता हो, या शायद ज़रा-सी ही सामर्थ हो, या नाम-मात्र की ही सम्पत्ति हो। परन्तु मैं आपको विश्वास दिलाता हूं, कि यदि आप उसे प्रभु यीशु को दे दें, जी हां, उसी थोड़े से को जो आपके पास है, तो प्रभु उसी वस्तु को लेकर इतनी महान् बनाएगा कि वह न केवल आपके लिये परन्तु लोगों की एक बहुत बड़ी भीड़ के लिये भी एक बहुत बड़ी आशीष का कारण ठहरेगी। क्या आप उसे प्रभु को देने को तैयार हैं? क्या आप अपने साधारण जीवन को यीशु को देने को तैयार हैं?

कई बार, मित्रो, हम अपने आपको बड़ा ही अयोग्य वा हीन् समझने लगते हैं। मैं यह नहीं कह रहा हूं कि हमें दीन या नम्र नहीं होना चाहिए। परन्तु मेरे कहने का अभिप्राय यह है, कि यदि हमारे पास थोड़ा सा ही कुछ है तो हम उसी में संतुष्ट और प्रसन्न नहीं होते। हम उस थोड़े ही से के लिये परमेश्वर के धन्यवादी नहीं होते। हम कुड़कुड़ाते हैं, और अपने आपको बड़ा ही अभागा समझते हैं, क्योंकि हमारे पास थोड़ा सा है। परन्तु हम देखते हैं, अपने पाठ में,

कि प्रभु यीशु ने उस थोड़े ही से को लेकर उसके लिये परमेश्वर को धन्यवाद दिया। मित्रो, हमें चाहिए कि हम परमेश्वर की दी हुई प्रत्येक वस्तु के लिये उसे धन्यवाद दें। हमें उसको धन्यवाद देना चाहिए अपने जीवनों के लिये और जीवन की प्रत्येक आवश्यकता की पूर्ती के लिये। हमें परमेश्वर को धन्यवाद देना चाहिए उसके वचन के लिये, और सबसे अधिक इस बात के लिए कि उसने हमें पाप से छुटकारा दिलाने के लिये अपने पुत्र मसीह यीशु को हमारे लिये दे दिया। उसने हमें हमारे अपराधों के लिये दन्डित न करना चाहा, परन्तु हमारे स्थान पर अपने ही पुत्र यीशु को हमारे पापों के कारण मृत्यु दण्ड दिलवाया ताकि उसके द्वारा हम नरक के दण्ड से बचकर अनन्त जीवन में प्रवेश करें। मित्रो, हमें परमेश्वर को धन्यवाद देना चाहिए, कि आज हम उसके वचन के निर्देशानुसार प्रभु यीशु मसीह में विश्वास लाकर, और अपने सब पापों से अपना मन फिराकर, और बपतिस्मे के द्वारा यीशु के भीतर होकर, अनन्त जीवन में प्रवेश कर सकते हैं। (प्रेरितों २ : ३८; गलतियों ३ : २६,२७)।

और अन्त में, आज हम अपने पाठ से यह सीखते हैं, कि हम परमेश्वर की दी हुई किसी भी आशीष को व्यर्थ न करें या उसका दुरुपयोग न करें। हम देखते हैं, कि भोजन कर लेने के बाद यीशु ने आज्ञा दी, कि बचे हुए सब टुकड़े बटोर लिये जाएं, ताकि कुछ भी फेंका न जाएं। आप लोगों में से सैकड़ों ऐसे लोग हैं जो हमारे यहाँ से बाइबल के पाठ, या बाइबल सम्बन्धि पुस्तक-पुस्तिकाएँ मंगवाकर पढ़ते हैं। यह बड़ी ही अच्छी बात है। किन्तु, मित्रो, जब आप उन पुस्तकों को पढ़ लेते हैं तो मेरा आपसे निवेदन है कि आप उन्हें व्यर्थ न करें, परन्तु उन्हें अन्य ज़रूरतमन्द लोगों को भी पढ़ने को दें, ताकि वे भी अपनी आत्मा में तृप्त हों, और कुछ फेंका न जाए।

परमेश्वर आप सब को आशीष दे।

—: ० :—

कुछ नागवार बातें

मित्रो :

परमेश्वर का धन्यवाद हो, कि उसने हमारे जीवनों में यह एक और सुन्दर अवसर प्रदान किया है ताकि हम अपने मनों को उसके वचन की ओर लगाएँ। मेरा विश्वास है, कि आपको याद होगा कि पिछली बार हमने अपने बाइबल अध्ययन में पवित्र बाइबल में से यूहन्ना के सुसमाचार की पुस्तक के छठे अध्याय में से देखा था। वहां हमने देखा था, कि प्रभु यीशु ने लोगों की भीड़ को, जिसमें लगभग पाँच हज़ार लोग शामिल थे, मुट्ठी भर भोजन में से खिलाकर तृप्त किया। परन्तु इसके आगे हम पढ़ते हैं, कि दूसरे दिन लोगों की वही भीड़ यीशु को फिर ढूंढ़ रही थी ; और जब वह उन्हें मिल गया तो वे बड़े ही प्रसन्न हुए। किन्तु लिखा है, कि यीशु ने उन लोगों से कहा, "कि मैं तुम से सच-सच कहता हूं, तुम मुझे इसलिए नहीं ढूंढ़ते हो कि तुमने अचम्भित काम देखे, परन्तु इसलिए कि तुम रोटियां खाकर तृप्त हुए।" यह सच्चाई उन लोगों के लिये वास्तव में बड़ी ही कड़वी थी। किन्तु यह एक सच्चाई थी ! क्योंकि वे यीशु को शिक्षा वा उपदेश सुनने के लिये नहीं ढूंढ़ रहे थे। वे उसे इसलिए नहीं ढूंढ़ रहे थे कि उन्होंने उसके अचम्भित काम देखकर उस पर विश्वास किया था। परन्तु वे उसे इसलिए ढूंढ़ रहे थे। कि वह उन्हें आज फिर रोटियां खिलाकर तृप्त करेगा। और आज कितने ही लोग मसीहीयत में अपना शौक केवल इसीलिए रखते हैं कि उन्हें कुछ मिल जाए। वे नाम मात्र के लिये मसीही कहलाना चाहते हैं; मसीह की कलीसिया के सदस्य बनना चाहते हैं। केवल इसलिये कि उन्हें कुछ मिल जाए। उन्हें अपनी आत्मा की

कोई चिन्ता नहीं है। उन्हें यीशु की शिक्षाओं से और उसकी आज्ञाओं को मानने से कोई मतलब नहीं है। वे केवल अपना मतलब हल करना चाहते हैं। परन्तु उस भीड़ से, जो यीशु को रोटियों के लिये ढूंढ़ रही थी, यीशु ने कहा, "नाशमान भोजन के लिये परिश्रम न करो, परन्तु उस भोजन के लिये जो अनन्त जीवन तक ठहरता है।"

यीशु उन्हें दिखाना चाहता था, कि जिस प्रकार वे लोग इतना अधिक परिश्रम करके नाशमान भोजन को प्राप्त करने के लिये उसे ढूंढ़ रहे थे, उन्हें चाहिए कि वे उसके पास उस आत्मिक भोजन को प्राप्त करने के लिये आएं जो अनन्त जीवन तक ठहरता है। उस रोज़, हम देखते हैं, यीशु ने उन्हें रोटियां न खिलाई परन्तु उसने उन्हें उपदेश दिया। और जो उपदेश यीशु ने उन्हें दिया, उसे सुनकर वे लोग कहने लगे कि ये बात नागवार है, इसे कौन सुन सकता है? क्योंकि यीशु ने उन से कहा, कि जिस रोटी को प्राप्त करने के लिए तुम परिश्रम कर रहे हो, उसे खाकर तुम्हें फिर भूख लगेगी, और वह तुम्हारे प्राणों को हमेशा के लिये नहीं बचा सकती। परन्तु जो रोटी मैं तुम्हें दूंगा वह तुम्हें आत्मिक अनन्त जीवन देगी, और यीशु ने कहा, कि वह रोटी स्वयं मैं हूं।

आईए, अब हम पवित्र बाइबल में से यीशु के इस उपदेश को स्वयं पढ़कर देखें। लिखा है, यीशु ने उन से कहा, "क्योंकि परमेश्वर की रोटी वही है, जो स्वर्ग से उतरकर जगत को जीवन देती है.....जीवन की रोटी मैं हूं: जो मेरे पास आएगा वह कभी भूखा न होगा और जो मुझ पर विश्वास करेगा, वह कभी पियासा न होगा.....यह वह रोटी है जो स्वर्ग से उतरती है ताकि मनुष्य उसमें से खाए और न मरे। जीवन की रोटी जो स्वर्ग से उतरी वह मैं हूं। यदि कोई इस रोटी में से खाए," यीशु ने कहा, "तो सर्वदा जीवित रहेगा और जो रोटी मैं जगत के जीवन के लिए दूंगा, वह मेरा मांस है।" परन्तु हम आगे पढ़ते हैं,

कि ये बातें सुनकर वे लोग बड़े ही निराश हुए। वे कहने लगे कि ये बातें नागवार हैं, सुनने के योग्य नहीं हैं; इन्हें कौन सुनना पसन्द करेगा। सो लिखा है, कि वे यीशु को छोड़कर वहां से चले गए। हम देखते हैं, कि कुछ ही देर पहिले वे लोग यीशु को ढूंढ़ रहे थे। परन्तु अब, वे उसे छोड़कर चले गए। क्योंकि उसकी बातें उन्हें कठोर लगीं, वे उन्हें मानने को तैयार न थे; वे कहते थे कि ये बातें नागवार हैं।

वास्तव में यीशु उन्हें यह दिखाने का प्रत्यन कर रहा था, कि एक दिन जब वह क्रूस के ऊपर चढ़ाया जाएगा, और जब वह वहां अपनी देह को बलिदान करेगा, तो इस प्रकार वह जगत के लोगों के लिये अनन्त जीवन का कारण बनेगा। और क्योंकि वे लोग उसे रोटियों के लिए ढूंढ़ रहे थे, इसलिए उसने अपनी तुलना रोटी से हीं करके उन्हें उपदेश दिया। अर्थात्, जिस प्रकार शारीरिक दृष्टिकोण से मनुष्य को ज़िन्दा रहने के लिये रोटी की आवश्यकता है, उसी प्रकार आत्मिक दृष्टिकोण से अनन्त जीवन प्राप्त करने के लिए उसे यीशु की आवश्यता है; क्योंकि यीशु जीवन की रोटी है। सो मनुष्य को चाहिए कि वह आत्मिक शक्ति वा जीवन प्राप्त करने के लिये उसके पास आए। परन्तु वे लोग कदाचित यीशु की बातें न समझ पाए, और वे उसकी बातों को नागवार कहकर उसके पास से चले गए।

परन्तु, आज आप अपने बारे में क्या सोचते हैं? क्या आप यीशु पर विश्वास करते हैं? क्या आप उसकी बातों को मानने को तैयार हैं? या क्या आज उसकी बातें आपको भी नागवार लगती हैं? मैं जानता हूं, कि आज परमेश्वर के वचन के प्रति बहुतेरे लोगों का व्यवहार नामान की तरह है। वह मनुष्य एक कोढ़ी था। वह चंगा होना चाहता था। परन्तु जब परमेश्वर के जन ने उसे आज्ञा देकर कहा, कि यरदन नदी में जाकर सात बार डुबकी लगा तो तू चंगा हो जाएगा। तो हम देखते हैं, कि वह इस बात को सुनकर क्रोधित हो यह कहता

हुआ चला गया, कि यह बात नागवार है ? इसे कौन सुन सकता है ? किन्तु ऐसा ही व्यवहार आज बहुतेरे लोगों का भी है।

कुछ लोग स्वर्ग के बारे में जानना चाहते हैं, सुनना चाहते हैं। परन्तु जब उन्हें नरक के बारे में बताया जाता है, तो वे सुनकर कहते हैं, कि यह बात नागवार है। क्योंकि उनके विचार में, परमेश्वर प्रेम है और इस कारण वह किसी को भी नरक में न जाने देगा। हां, इसमें कोई संदेह नहीं, कि परमेश्वर नहीं चाहता कि कोई भी मनुष्य नरक में जाए। परन्तु मित्रो, परमेश्वर केवल प्रेम ही नहीं है। वह पवित्र, धर्मी और न्यायी भी है। क्योंकि वह पवित्र है, इस कारण वह किसी भी अपवित्र मनुष्य के साथ संगति नहीं रख सकता। इसलिए, हमें यह कदापि नहीं सोचना चाहिए कि स्वर्ग में कोई भी अपवित्र मनुष्य प्रवेश करेगा। फिर, क्योंकि वह धर्मी और न्यायी है, इस कारण वह धर्मी और अधर्मी को उसके कामों के अनुसार प्रतिफल अवश्य देगा। सो चाहे आप विश्वास करें या न करें, लेकिन जैसे स्वर्ग है वैसे ही नरक भी अवश्य है। पवित्र बाइबल में लिखा है, "धोखा न खाओ, परमेश्वर ठट्ठों में नहीं उड़ाया जाता, क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है वही काटेगा। क्योंकि जो अपने शरीर के लिये बोता है, वह शरीर के द्वारा विनाश की कटनी काटेगा और जो आत्मा के लिए बोता है, वह आत्मा के द्वारा अनन्त जीवन की कटनी काटेगा।" (गलतियों ६ : ७, ८)। इसका अर्थ यह है, कि प्रत्येक मनुष्य अपनी ही इच्छा से स्वर्ग या नरक में प्रवेश करेगा, अर्थात् परमेश्वर की इच्छा पर चलकर या अपनी इच्छा पर चलकर।

फिर हम देखते हैं, कि कुछ लोगों का विचार है, कि उद्धार पाने के अनेकों मार्ग हैं। उन्हें यह बात नागवार लगती है। कि उद्धार केवल यीशु ही के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। तौभी हम पढ़ते हैं कि यीशु ने कहा, "मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं ; बिना मेरे द्वारा कोई

पिता के पास नहीं पहुंच सकता।" (यूहन्ना १४ : ६)। क्या यीशु के अतिरिक्त किसी अन्य व्यक्ति ने हमारे लिए अपनी जान दी, या अपने पवित्र लोहु को हमारे पापों की छुड़ौती के लिए बहाया? यदि यीशु हमारा उद्धारकर्त्ता नहीं है, तो फिर कौन है? प्रेरित पौलुस एक जगह कहता है, "यह बात सच और हर प्रकार से मानने के योग्य है, कि मसीह यीशु पापियों का उद्धार करने के लिए जगत में आया, जिन में सबसे बड़ा मैं हूँ।" (१ तीमुथियुस १ : १५)।

किन्तु, फिर कुछ लोगों को आज यीशु की यह आज्ञा नागवार लगती है, कि उद्धार पाने के लिए बपतिस्मा लेना आवश्यक है। वे कहते हैं कि यह बात अनावश्यक है, इसमें कोई उचित कारण नहीं है, यह बात नागवार है। परन्तु तौभी हम देखते हैं, कि प्रभु यीशु ने कहा, कि **"जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा।"** (मरकुस १६ : १६)। प्रेरित पतरस, प्रेरितों २ : ३८ में, कहता है कि तुम में से हर एक अपना मन फिराए और अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा ले। और फिर पौलुस, गलतियों ३ : २७ में, कहता है, कि तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है, अर्थात् वे मसीह के भीतर हो गए हैं। तो क्या यह बात नागवार है? क्या हमें उद्धार पाने के लिए या पापों की क्षमा के लिए या मसीह को पहिन लेने के लिए बपतिस्मा नहीं लेना चाहिए?

किन्तु मित्रो, चाहे जो भी हो, चाहे हम परमेश्वर के वचन की बातों को ग्रहण करें या न करें, चाहे हम उन्हें मानें या न मानें, परन्तु परमेश्वर अपने वचन को कभी नहीं बदलता। अभी हमने अपने पाठ में नामान को सम्बोधित किया था; वह परमेश्वर की आज्ञा को सुनकर उसे नागवार कहकर चला गया था, परन्तु तौभी हम देखते हैं कि वह केवल तभी चंगा हुआ जब उसने उसी नागवार आज्ञा को माना। जो भीड़ उस दिन यीशु के उपदेश को सुन रही थी, वे उसकी बातों को नागवार कह

कर चले गए। परन्तु यीशु ने उन्हें बुलाकर उन से यूँ नहीं कहा कि मैं तुम्हारे नाराज़ होने के कारण अपनी बात को बदल देता हूं या अपने वचन को वापस ले लेता हूं। सो चाहे हमें उसकी बातें अच्छी लगें या नागवार लगें, किन्तु मित्रो, परमेश्वर का वचन अटल है। प्रभु यीशु ने एक जगह कहा, "आकाश और पृथ्वी टल जाएंगे, परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी।" (मत्ती २४ : ३५)। परमेश्वर अपने वचन की आज्ञाओं को मानने के लिए आपको समझ वा शक्ति दे।

—: o :—

सफ़ल, परन्तु असफ़ल !

मित्रो :

परमेश्वर का बड़ा ही धन्यवाद हो कि उसने हम सब को यह एक बड़ा ही बहुमूल्य अवसर दिया है जिसमें हम एकत्रित होकर जीवन की कुछ ऐसी महत्वपूर्ण बातों के ऊपर विचार कर सकते हैं जिनका सम्बन्ध हमारी आत्मा, अर्थात् हमारे उस भीतरी मनुष्यत्व से है जो अनन्तकाल तक बना रहेगा, और परमेश्वर द्वारा ठहराए उन दो निश्चित स्थानों में से किसी एक में मृत्यु पश्चात् प्रवेश करेगा जिन्हें हम स्वर्ग तथा नरक के नामों से जानते हैं।

मित्रो, हम सभी अपने जीवनों में सफ़ल होना चाहते हैं, हम प्रयत्न करते हैं ताकि हम सफ़ल हों। हम में से कोई भी असफ़ल होने की इच्छा नहीं करता। परन्तु तौभी कभी-कभी जिस बात को हम सफ़लता समझ लेते हैं, वही वास्तव में एक बहुत बड़ी असफ़लता प्रमाणित होती है। और आज हम एक ऐसे ही मनुष्य के बारे में देखने जा रहे हैं जिसने अपने मन में सोचा था कि मैं सँसार में सबसे बड़ा सफ़ल मनुष्य हूँ, परन्तु वास्तव में वह एक बहुत बड़ा असफ़ल मनुष्य सिद्ध हुआ।

हम उस मनुष्य का नाम तो नहीं जानते, परन्तु प्रभु यीशु ने उसका वर्णन करके एक जगह यूँ कहा, कि वह एक धनवान मनुष्य था और एक बार जब उसकी भूमि में बहुत ही बड़ी उपज हुई, "तब वह अपने मन में विचार करने लगा, कि मैं क्या करूँ, क्योंकि मेरे यहां जगह नहीं, जहाँ अपनी उपज इत्यादि रखूँ। और उसने कहा; मैं यह करूँगा। मैं अपनी बखारियां तोड़कर उनसे बड़ी बनाऊँगा; और वहां अपना

सब अन्न और सम्पत्ति रखूँगा : और अपने प्राण से कहूँगा, कि प्राण, तेरे पास बहुत वर्षों के लिए बहुत सम्पत्ति रखी है; चैन कर, खा, पी, सुख से रह। परन्तु परमेश्वर ने उससे कहा ; हे मूर्ख, इसी रात तेरा प्राण तुझ से ले लिया जाएगा : तब जो कुछ तूने इकट्ठा किया है, वह किसका होगा ?" और फिर यीशु ने उपदेश देकर कहा कि, "ऐसा ही वह मनुष्य भी है जो अपने लिए धन बटोरता है, परन्तु परमेश्वर की दृष्टि में धनी नहीं।" (लूका १२ : १७-२१)।

सो, यहां हमारा परिचय एक बड़े ही धनवान मनुष्य से होता है। यदि मैं एक चित्रकार होता, और मुझ से इस व्यक्ति का एक चित्र बनाने को कहा जाता, तो मैं शायद इस मनुष्य का एक बड़ा ही आकर्षक चित्र बनाता; जिसमें मैं उसे एक बहुत बड़े धनवान के रूप में चित्रित करता। शायद मैं उसे एक अलीशान बंगले के पास एक बहुत ही बढ़िया कार में बैठे हुए अपार धन-सम्पत्ति और नौकर-चाकरों के बीच में चित्रित करता, और फिर मैं उस चित्र के नीचे लिखता, "एक सफल धनवान !" परन्तु, तभी परमेश्वर मेरे हाथ से कलम ले लेता है, और वह मेरे लिखे हुए को मिटाकर उसके स्थान पर लिखता है, "एक मूर्ख !" संसार की दृष्टि में यह मनुष्य एक बहुत बड़ा धनवान और बुद्धिमान था ! परन्तु परमेश्वर के लेखे में वह एक मूर्ख था ! क्योंकि हम देखते हैं कि परमेश्वर ने उसे सम्बोधित करके उससे कहा कि, "हे मूर्ख!" सो आईए, हम देखें कि परमेश्वर की दृष्टि में वह मनुष्य मूर्ख क्यों था ?

सबसे पहिले, हम देखते हैं, कि इस मनुष्य ने अपने जीवन में परमेश्वर को कोई स्थान न दिया। पवित्र बाइबल का लेखक एक जगह कहता है, "दुष्ट अधोलोक में लौट जाएंगे, तथा वे सब जातियां भी जो परमेश्वर को भूल जाती हैं।" (भजन० ९ : १७)। हम देखते हैं, कि उसने कहा, कि मैं अपनी उपज, अपनी बखारियां, अपना अन्न, और अपनी सम्पत्ति ! उसे केवल अपना ही ध्यान था, परन्तु परमेश्वर

का उसके जीवन में कोई स्थान न था। परमश्वर ने उस मनुष्य को सफ़ल बनाने के लिए सब कुछ प्रदान किया था। उसने उसे अच्छी सेहत दी थी, सूरज की गर्मी और रौशनी दी थी। परमेश्वर ने उसे बारिश और हर प्रकार के मौसम दिए थे और उसकी भूमि को उपजाऊ बनाया था, और फिर हर एक मुट्ठी भर बीज के लिए जो उसने बोया था उसे भरपूर फसल दी थी। परन्तु उसके पास परमेश्वर के लिए देने को कुछ भी न था—वह सब कुछ अपने ही पास रखना चाहता था। मित्रो, जो मनुष्य अपने जीवन में परमेश्वर को कोई स्थान नहीं देता वह वास्तव में कभी भी सफ़ल नहीं हो सकता।

दूसरी बात, जो हम उस मनुष्य के बारे में देखते हैं, वह यह है, कि उसने अपनी बहुतायत में किसी भी अन्य मनुष्य को शामिल न किया। उसके पास इतना अधिक था, कि वह कहता था कि मैं इस सबका क्या करूँ! और फिर उसने योजना बनाई कि मैं इस सब को अपने माल-खानों में जमा कर दूंगा। उसने यह नहीं कहा, कि मैं पास में बने यतीमखाने में यतीम बच्चों के लिए अपने धन में से कुछ दूंगा; न उसने यह सोचा, कि मैं पास में बनी झोपड़ी में रहनेवाली विधवा की कुछ मदद करूँगा, और न ही उसके मुंह से यह बात निकली कि मैं किसी बीमार या आवश्यकता से पीड़ित मनुष्य की कुछ सहायता करूँगा। नहीं, उसे केवल अपनी ही चिन्ता थी—उसकी योजना में कोई भी अन्य मनुष्य शामिल न था—वह केवल "मैं" को जानता था! एक बार जब प्रभु यीशु एक अन्य व्यक्ति के इस प्रश्न का उत्तर दे रहा था, कि मनुष्य के लिए परमेश्वर की सबसे बड़ी और मुख्य आज्ञा क्या है? तो उसने कहा, "तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख। बड़ी और मुख्य आज्ञा तो यही है। और उसी के समान यह दूसरी भी है, कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।" (मत्ती २२ : ३७-३९)। मित्रो, बाइबल सिखाती है, कि यदि मनुष्य उन मनुष्यों से प्रेम नहीं रख सकता

जिन्हें वह देखता है, तो फिर वह अनदेखे परमेश्वर को कैसे प्रेम कर सकता है। और यदि हम मनुष्यों से प्रेम रखते हैं तो हम अपने ही हित की नहीं परन्तु अन्य लोगों के हित की भी चिन्ता करेंगे।

तीसरी बात इस संबन्ध में हम यह देखते हैं, कि उस मनुष्य ने सोचा कि मनुष्य के प्राणों का संतोष उसके धन सम्पत्ति की बहुतायत में ही होता है। सो हम देखते हैं, कि वह कहता है, कि मेरे प्राण खा, पी, चैन से रह, क्योंकि तेरे पास वर्षों के लिये बहुत कुछ है। परन्तु वास्तव में, मनुष्य के जीवन में एक ऐसी वस्तु है जो पृथ्वी पर की वस्तुओं से संतुष्ट नहीं हो सकती। प्रभु यीशु ने इस विषय में एक स्थान पर कहा, "कि मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है जीवित रहेगा।" (मत्ती ४ : ४)। परन्तु इस महत्वपूर्ण बात की ओर उसने कोई ध्यान न दिया।

और फिर हम यह भी देखते हैं, कि उस मनुष्य को अपने जीवन पर बड़ा गर्व था। उसे इस बात का तनिक भी आभास न था कि मनुष्य का जीवन अनिश्चित है। वह सोचता था कि वह हमेशा, या एक बड़े समय तक पृथ्वी पर बना रहेगा। उसने मृत्यु की सच्चाई को भुला दिया था। परन्तु मित्रो, पवित्र बाइबल में लिखा है कि "कल के दिन के विषय में मत फूल, क्योंकि तू नहीं जानता कि दिन भर में क्या होगा।" (नीतिवचन २७ : १)। हम देखते हैं, कि वह मनुष्य कल और आनेवाले समय के बारे में कह रहा था, परन्तु परमेश्वर ने उस से कहा कि आज ही रात तेरा प्राण तुझ से ले लिया जाएगा। मित्रो, अकसर हम सभी समय-समय पर मृत्यु की सच्चाई को भुला बैठते हैं, और हम आनेवाले भविष्य के लिये बड़ी-बड़ी योजनाएं बनाने लगते हैं। हम कभी इस बात की ओर कोई ध्यान ही नहीं देते, कि शायद आज का दिन मेरे जीवन का अन्तिम दिन हो। और जब मैं आपसे यह बात कह रहा हूं तो मेरा ध्यान एक ऐसी ही घटना पर जाता है जिसे हुए

अभी एक ही सप्ताह गुज़रा है, और उसका वर्णन कर देना यहां मैं उचित समझता हूं। वह एकनौजवान था, और एक दुकान में काम करता था, मैं अकसर उस दुकान से सामान खरीदता हूं। परन्तु एक सप्ताह पहिले जब वह दुकान से अपने घर की ओर जा रहा था, तो घर पहुंचने के लिए उसे केवल एक ही सड़क पार करनी थी—और अभी वह उसे पार भी न कर पाया था कि एकाएक एक गाड़ी उसके ऊपर से गुज़र गई। तीन दिन तक वह नवयुवक हस्पताल में पड़ा रहा। और फिर यह खबर आई, "कि वह अब न रहा।" मित्रो, अब वह मनुष्य न रहा, किन्तु उसने अपने विषय में कभी ऐसा सोचा भी न होगा। और न हम कभी अपने बारे में ऐसा सोचना पसन्द करते हैं। परन्तु यह एक सच्चाई है, कि एक दिन वह आता है जब हम वास्तव में न रहेंगे। क्योंकि यह संसार हमारा घर नहीं है। और न ये वस्तुएं हमारा जीवन हैं। पवित्र शास्त्र कहता है, "क्योंकि न हम जगत में कुछ लाए हैं और न कुछ ले जा सकते हैं।" (१ तीमुथियुस ६ : ७)।

परन्तु, वह मनुष्य कहता था, कि यह सब मेरा है। उसे इस बात की कल्पना तक भी न थी कि जिन वस्तुओं को वह अपना कह रहा है वे वास्तव में उसकी नहीं है। सो परमेश्वर ने उससे पूछा : कि **तब जो कुछ तू ने इकट्ठा किया है वह सब किसका होगा ?** अर्थात जिसे तूने परिश्रम करके बनाया और इकट्ठा किया है, वे सब वस्तुएं किसकी होंगी, क्योंकि तू आज ही उन सब वस्तुओं से अलग कर दिया जाएगा ? मित्रो, यह बात कितनी विचारपूर्ण है। यहां एक मनुष्य है, जो अपने आप को सफल समझकर अपने ऊपर गर्व कर रहा था, परन्तु परमेश्वर ने उसे सम्बोधित करके उसे एक मूर्ख कहा !

किन्तु, आज आप अपने बारे में क्या सोचते हैं ? मान लीजिए यदि आज परमेश्वर आपके ऊपर ध्यान करे तो वह आपके बारे में क्या कहेगा ? प्रभु यीशु ने कहा, "ऐसा ही वह मनुष्य भी है जो अपने

लिए धन बटोरता है, परन्तु परमेश्वर की दृष्टि में धनी नहीं।" (लूका १२ : २१)।

मित्रो, हमारा भरोसा धन और अपने प्राणों के ऊपर नहीं परन्तु उस सच्चे वा जीवते परमेश्वर के ऊपर होना चाहिए जो हमें प्राण, जीवन और सब कुछ देता है। और जिसने पापों से हमारा उद्धार करने के लिए अपने पुत्र यीशु को हमारे लिए बलिदान कर दिया, ताकि हम उसकी आज्ञानुसार उस पर विश्वास लाकर, और अपने सब पापों से मन फिराकर, और बपतिस्मा लेने के द्वारा उसकी मृत्यु और जी उठने की समानता में उसके साथ एक होकर उस आत्मिक जीवन को पहिन लें जो उसके द्वारा उद्धार पाने के लिए दिन-प्रति-दिन बढ़ता जाता है। हमारे जीवनों का परम उद्देश्य धन-सम्पत्ति इकट्ठा करना नहीं, परन्तु परमेश्वर का भय मानना और उसकी आज्ञाओं पर चलना होना चाहिए।

मेरी आशा है, कि इन बातों के ऊपर आप पूरी गम्भीरता के साथ विचार करेंगे। परमेश्वर अपनी इच्छा पर चलने के लिये आपको सामर्थ दे।

— :o: —

मसीह हमारा मेल है

मित्रो:

अकसर मेरे पास पत्र आते हैं जिनमें कुछ लोग कहते हैं कि सत्य-सुसमाचार कार्यक्रम में प्रभु के वचन को सुनकर उन्हें बड़ी शान्ति मिलती है। यह दिखाता है कि लोग वास्तव में शान्ति की इच्छा रखते हैं। परन्तु इसमें कोई संदेह नहीं, कि यद्यपि संसार में नाना प्रकार से शान्ति लाने के प्रयत्न किए जा रहे हैं, किन्तु तौभी शायद ही कोई ऐसा दिन गुज़रता है जो लड़ाई और उपद्रव के बिना हो। व्याकुलता, बेचैनी और अशान्ति संसार के सभी भागों में वर्तमान है। लड़ाई के डर से सभी देश एक दूसरे को सन्देह की दृष्टि से देखते हैं। घृणा और लड़ाईयों ने शताब्दियों से इस पृथ्वी को घेर रखा है। लाखों जीवन असमय की मृत्यु और सदा की बरबादी के शिकार हो चुके हैं। किन्तु शान्ति की खोज जारी है। कोई जंगलों में खोज रहा है, तो कोई पहाड़ों में; कोई सम्मेलनों मे खोज रहा है, तो कोई हथियारों में। परन्तु शान्ति कहाँ है ? कहाँ है शान्ति ?

वास्तव में देखा जाए तो मनुष्य को शान्ति की आवश्यकता तीन प्रकार से है। अर्थात, पहिले तो उसे स्वयं अपने भीतर शान्ति की आवश्यकता है, और दूसरे अन्य लोगों के साथ और तीसरे और मुख्य रूप से परमेश्वर के साथ। और सच्ची तथा वास्तविक शान्ति मनुष्य को वास्तव में केवल परमेश्वर ही दे सकता है। और परमेश्वर चाहता है कि मनुष्य को इसी प्रकार की सच्ची शान्ति प्राप्त हो। और इसी उद्देश्य से उसने अपने पुत्र यीशु को इस पृथ्वी पर भेजा। सो हम पढ़ते हैं, कि

जिस समय यीशु का जन्म हुआ था उस समय लोगों के एक झुन्ड ने स्वर्गदूतों को यह कहते सुना था, "कि आकाश में परमेश्वर की महिमा और पृथ्वी पर उन मनुष्यों में जिनसे वह प्रसन्न है शान्ति हो।" (लूका २:१४)।

यशायाह नाम का एक भविष्यद्वक्ता जो यीशु के जन्म से लगभग आठ सौ वर्ष पूर्व हुआ था, उसके विषय में एक जगह यूं कहता है, "जो लोग अन्धियारे में चल रहे थे उन्होंने बड़ा उजियाला देखा; और जो लोग घोर अन्धकार से भरे हुए मृत्यु के देश में रहते थे, उन पर ज्योति चमकी····· क्योंकि हमारे लिये एक बालक उत्पन्न हुआ, हमें एक पुत्र दिया गया है; और प्रभुता उसके कांधों पर होगी, और उसका नाम अद्भुत युक्ति करनेवाला पराक्रमी परमेश्वर, अनन्तकाल का पिता, और शांति का राजकुमार रखा जाएगा। उसकी प्रभुता सर्वदा बढ़ती रहेगी, और उसकी शांति का कभी अन्त न होगा ·····।" (यशायाह ६ : २, ६, ७)।

जब यीशु ने सर्व प्रथम लोगों को शिक्षा और उपदेश देना आरम्भ किया था तो उसने स्वयं—शान्ति का उपदेश दिया। उसने कहा, "धन्य हैं वे, जो मन के दीन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है। धन्य हैं वे, जो शोक करते हैं, क्योंकि वे शान्ति पाएंगे। धन्य हैं वे, जो नम्र हैं, क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे। धन्य हैं वे, जो धर्म के भूखे और पियासे हैं, क्योंकि वे तृप्त किए जाएंगे। धन्य हैं वे, जो दयावन्त हैं, क्योंकि उन पर दया की जाएगी। धन्य हैं वे, जिनके मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे। धन्य हैं वे, जो मेल करवानेवाले हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएँगे। धन्य हैं वे, जो धर्म के कारण सताए जाते हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है। धन्य हो तुम, जब मनुष्य मेरे कारण तुम्हारी निन्दा करें; सताएं और झूठ बोल-बोलकर तुम्हारे विरोध में सब प्रकार की बुरी बात कहें। आनन्दित

और मगन होना क्योंकि तुम्हारे लिये स्वर्ग में बड़ा फल है, इसलिये की उन्होंने उन भविष्यद्वक्ताओं को जो तुम से पहिले थे इसी रीति से सताया था।" (मत्ती ५ : ३-१२)।

फिर, यीशु ने मनुष्य को अन्य लोगों के साथ शान्ति का उपदेश दिया। उसने कहा, "इस कारण जो कुछ तुम चाहते हो, कि मनुष्य तुम्हारे साथ करें, तुम भी उनके साथ वैसा ही करो ···· " (मत्ती ७ : १२)। दूसरे शब्दों में, यदि हम चाहते हैं, कि अन्य सभी लोग हमारे साथ अच्छा व्यवहार करें, हमारे साथ सहानुभूति दिखाएं, किसी से हमारी बुराई न करें, और हमें किसी भी प्रकार से कोई हानि न पहुंचाए, परन्तु नम्रता और शान्ति पूर्वक हमारे साथ रहें, तो प्रभु यीशु ने कहा, कि स्वयं तुम पहिले होकर उनके साथ ऐसा ही व्यवहार करो। वास्तव में यदि प्रभु यीशु के इस सिद्धान्त का पालन आज सच्चाई से किया जाए, तो न कोई मनुष्य किसी मनुष्य के साथ बैर रखेगा और न कोई देश किसी देश के ऊपर चढ़ाई करेगा।

परन्तु, यीशु न केवल मनुष्य को स्वयं-शान्ति देने को आया था, और न केवल उसने मनुष्य को अन्य लोगों के साथ शान्तिपूर्वक रहने का मार्ग दिखाया, परन्तु उसने मनुष्य और परमेश्वर के बीच में भी शान्ति की स्थापना की।

शान्ति की आवश्यकता उस स्थान पर होती है जहाँ बैर, ईर्ष्या, झगड़ा, और विरोध होता है। और जब हम मनुष्य और परमेश्वर के बीच शान्ति की बात कर रहे हैं, तो हमारा अभिप्राय ठीक यही है। क्योंकि मनुष्य और परमेश्वर के बीच में एक ऐसा बैर था जिसके कारण मनुष्य परमेश्वर से दूर और अलग था, और वह बैर था "पाप!" इसका अभिप्राय यह कदापि नहीं है कि पाप आज संसार में नहीं है या पाप के कारण आज लोग परमेश्वर से दूर वा अलग नहीं है। परन्तु यीशु के उस बड़े काम के कारण जो उसने स्वर्ग से पृथ्वी पर आकर क्रूस के

ऊपर पूरा किया, आज प्रत्येक मनुष्य अपने पापों से छुटकारा प्राप्त करके अपना मेल परमेश्वर के साथ कर सकता है।

पाप क्योंकि परमेश्वर की इच्छा वा स्वभाव का विरोधी है इस कारण वह एक ऐसी वस्तु है जो मनुष्य और परमेश्वर के बीच में बैर को उत्पन्न करती है। और जब तक बैर मिट न जाए तब तक वास्तव में शान्ति या मेल का होना असम्भव है। यद्यपि परमेश्वर प्रत्येक मनुष्य से प्रेम करता है, चाहे वह कितना भी बड़ा अपराधी या अधर्मी क्यों न हो; और वह चाहता है कि प्रत्येक मनुष्य के साथ वह अपना मेल करले, परन्तु जब तक पाप मनुष्य और परमेश्वर के बीच विद्यमान है तब तक परमेश्वर और मनुष्य का एक होना असम्भव है। पवित्र बाइबल में एक जगह लिखा है, कि परमेश्वर तो सब का उद्धार करना चाहता है परन्तु मनुष्य के पाप और अधर्म के कामों के कारण वह मनुष्य से दूर है। (यशायाह ५९ : १-२)।

सो यदि आज हम अपने परमेश्वर के साथ शान्ति स्थापित करना चाहते हैं ; यदि आज हम अपने सृष्टिकर्त्ता के साथ अपना मेल करना चाहते हैं तो हमें क्या करना चाहिए ? बहुतेरे लोग शायद कहेंगे, कि हम तो कुछ भी नहीं कर सकते, यह काम तो केवल परमेश्वर का ही है। लेकिन दोस्तो, मेल एक-तरफ़ा कभी नहीं होता, शान्ति की स्थापना के लिए दोनों ही पक्षों को कुछ न कुछ करना आवश्यक होता है। मान लीजिए, यदि दो मित्रों में किसी बात के ऊपर बड़ा झगड़ा खड़ा हो जाता है, किन्तु उनमें से एक अपने मित्र को क्षमा करने के लिए तैयार हो जाता है और वह फिर से मित्रता का हाथ उसकी ओर बढ़ाता है; परन्तु यदि अब वह दूसरा मित्र उसे स्वीकार न करना चाहे और जिस बात के कारण उन दोनों के बीच बैर पैदा हुआ था वह उसी को करता रहे तो फिर उनमें मेल कैसे हो सकता है ?

परन्तु जब हम मनुष्य और परमेश्वर के बीच शान्ति की स्थापना

के बारे में विचार करते हैं, तो हम देखते हैं, कि परमेश्वर ने तो इस सम्बन्ध में अपना काम पूरा कर दिया है, अर्थात वह मनुष्य को क्षमा करने के लिये तैयार है और उसने उसे वह मार्ग भी प्रदान किया है जिसके द्वारा वह अपने पापों से छुटकारा प्राप्त करके उसकी संगति में वापस आ सकता है। परन्तु अब यह कर्त्तव्य मनुष्य का है कि वह उसके अनुग्रह को स्वीकार करे और अपने पापों से उसके बताए हुए मार्ग द्वारा छुटकारा प्राप्त करके अपना मेल उसके साथ कर ले।

सो हम देखते हैं, कि आज से दो हज़ार वर्ष पूर्व, जब मनुष्यों ने परमेश्वर के पुत्र यीशु को लेकर क्रूस पर चढ़ाया, तो इस प्रकार उसने अपनी उस योजना को पूरा किया जिसका वर्णन इस घटना के सैंकड़ों वर्ष पूर्व पवित्र शास्त्र में इन शब्दों में लिखा गया था, "निश्चय उसने हमारे रोगों को सह लिया और हमारे ही दुखों को उठा लिया; तौभी हम ने उसे परमेश्वर का मारा-कूटा और दुर्दशा में पड़ा हुआ समझा परन्तु वह हमारे अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के हेतु कुचला गया; हमारी ही शान्ति के हेतु उस पर ताड़ना पड़ी, कि उसके कोड़े खाने से हम लोग चंगे हो जाएं। हम तो सबके सब भेड़ों की नाईं भटक गए थे; हम में से हर एक ने अपना-अपना मार्ग लिया; और यहोवा ने हम सभों के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया।" (यशायाह ५३ :४-६)।

सो इस प्रकार परमेश्वर ने, हमारे पापों से हमें छुटकारा दिलाने के लिए, हम में से प्रत्येक जन के पापों के कारण अपने पुत्र यीशु को दन्डित किया। परन्तु यह काम परमेश्वर ने किया है, क्योंकि वह हम से मेल करना चाहता है। और यीशु, जिसने हमारे पापों के कारण दन्ड सहा और अपने प्राणों को दे दिया, हमारा मेल है। पवित्र वचन कहता है, "पर अब तो मसीह यीशु में तुम जो पहिले दूर थे, मसीह के लोहू के द्वारा निकट हो गए हो। क्योंकि वही हमारा मेल है, जिस ने दोनों

को एक कर लिया : और अलग करनेवाली दीवार को जो बीच में थी ढा दिया।" (इफिसियों २ : १३, २४)।

सो इस तरह यीशु ने क्रूस के ऊपर बैर को नाश करके मनुष्य और परमेश्वर के बीच शान्ति के द्वार को खोल दिया— वह हमारा मेल है। उसके द्वारा हम अपने परमेश्वर के साथ अपना मेल कर सकते हैं। परन्तु कैसे ? क्या परमेश्वर ने हमें कुछ करने की आज्ञा दी है ? जी हां। परमेश्वर का वचन आज्ञा देता है, कि हम में से प्रत्येक मनुष्य को प्रभु यीशु मसीह में विश्वास करना चाहिए, और अपने-अपने पापों से मन फिराकर अपने पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लेना चाहिए। पवित्र बाइबल के अनुसार बपतिस्मा लेने का अर्थ है जल के भीतर दफ़न होना और उसमें से बाहर आना। प्रेरित पौलुस एक जगह कहता है, "क्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, तो उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया ? सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें।" (रोमियों ६ : ३-४)। और मित्रो, यह नया जीवन वही जीवन है जो परमेश्वर के साथ शान्तिपूर्ण जीवन है, और जो हमें प्रभु यीशु के द्वारा मिलता है।

सो मसीह हमारा मेल है। इसलिए, आईए, हम उसके द्वारा अपने परमेश्वर के साथ अपना मेल कर लें।

— :o: —

यीशु, हमारा सहायक और हमारे पापों का प्रायश्चित

मित्रो,

प्रभु यीशु मसीह के बारे में एक बड़ी ही विशेष बात हम यह देखते हैं कि वह हमारा सहायक और हमारे पापों का प्रायश्चित है। यूहन्ना नाम का प्रभु यीशु का एक शिष्य जो प्रभु के साथ लगभग साढ़े तीन वर्ष तक रहा था, और जिसने उसकी मृत्यु, पुनरुत्थान, और स्वर्गारोहण को स्वयं अपनी ही आँखों से देखा था, एक जगह पवित्र बाइबल में ममीह यीशु के अनुयायीयों को लिखकर यूं कहता है : "जो समाचार हमने उस से सुना, और तुम्हें सुनाते हैं, वह यह है; कि परमेश्वर ज्योति है : और उसमें कुछ भी अन्धकार नहीं। यदि हम कहें कि उसके साथ हमारी सहभागिता है, और फिर अन्धकार में चलें, तो हम झूठे हैं : और सत्य पर नहीं चलते। पर यदि जैसा वह ज्योति में है, वैसे ही हम भी ज्योति में चलें, तो एक दूसरे से सहभागिता रखते हैं; और उसके पुत्र यीशु का लोहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है। यदि हम कहें कि हम में कुछ भी पाप नहीं, तो अपने आप को धोखा देते हैं ; और हम में सत्य नहीं। यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने, और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वास योग्य और धर्मी है। यदि कहें कि हमने पाप नहीं किया, तो उसे झूठा ठहराते हैं; और उसका वचन हम में नहीं है" सो "हे मेरे बालको, मैं ये बातें तुम्हें इसलिए लिखता हूं, कि तुम पाप न करो ; और यदि कोई पाप करे, तो पिता के पास हमारा एक

सहायक है, अर्थात धार्मिक यीशु मसीह । और वही हमारे पापों का प्रायश्चित है : और केवल हमारे ही नहीं, बरन सारे जगत के पापों का भी ।" (१ यूहन्ना १ : ५-१०; २ : १-२) ।

मित्रो, यहां हम विशेष रूप से इस बात को देखते हैं, कि पवित्र शास्त्र में यीशु को हमारा सहायक और हमारे पापों का प्रायश्चित कहकर सम्बोधित किया गया है । और इसका कारण पवित्र शास्त्र हमें इन शब्दों में देता है, कि जब हम निर्बल ही थे मसीह ठीक समय पर भक्तिहीनों के लिए मरा ; और जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिए मरा । (रोमियों ५ : ६,८) ।

क्रूस के ऊपर प्रभु यीशु मसीह की मृत्यु का कारण हमारी सहायता करना था । क्योंकि हम, मनुष्य होने के कारण निर्बल और अयोग्य थे; हम में इतनी शक्ति वा योग्यता नहीं थी कि हम स्वयं परमेश्वर के पास जाकर अपने पापों की क्षमा उस से प्राप्त करते, क्योंकि पाप के विशाल बोझ ने हमें दबा रखा था, और हम उसके पास ऊपर पहुंचने के लिए कदापि नहीं उठ सकते थे । मान लीजिए, यदि आप एक दिन में केवल तीन ही पाप करते हैं । (अब, पाप से हमारा अभिप्राय यह नहीं है कि कोई अवश्य ही डाका डाले, या चोरी करे, या हत्या करे) । परन्तु पवित्र बाइबल के अनुसार हम देखते हैं, कि जब कभी भी हम किसी मनुष्य से डाह या ईर्ष्या करते हैं, या किसी वस्तु का लालच करते हैं, या क्रोध करते हैं, या कोई भी गन्दी बात अपने मुहँ से बोलते हैं, और यहाँ तक, कि जब भी कोई कुविचार हमारे मन में आता है— और कोई भी ऐसा कार्य जिसके द्वारा हम मनुष्य को और परमेश्वर को दुख पहुंचाते हैं, तो हम पाप करते हैं । सो हम देखते हैं, कि इस प्रकार परमेश्वर के दृष्टिकोण से तो हम न जाने प्रतिदिन कितने पाप करते हैं । किन्तु हम यह देख रहे थे, कि यदि आप एक दिन में केवल तीन ही पाप करते हैं, तो फिर एक वर्ष में उनकी गिनती कितनी होगी ? और फिर पाँच साल में, दस साल में, और

पन्द्रह या बीस साल में आपके ऊपर कितने पापों का दोष होगा ? परन्तु फिर हम यह भी याद रखें कि परमेश्वर के निकट तो एक पाप भी बहुत बड़ी वस्तु है, और मनुष्य को उसके पास पहुंचने से रोकने के लिए वही बहुत है। परन्तु यदि मेरे जीवन में सैंकड़ों और हज़ारों पाप एकत्रित हो जाएँ तो फिर मेरा बोझ कितना बड़ा होगा !

आप देख सकते हैं, कि इन बातों से, जो अभी हमने देखीं, मैं आपको क्या दिखाने का प्रत्यन कर रहा हूं। मैं आपको यह दिखाना चाहता हूं, कि संसार में प्रत्येक मनुष्य के ऊपर पापों का कितना बड़ा बोझ है, और इस कारण वह स्वयं कितना निर्बल, शक्तिहीन और अयोग्य है। उसमें स्वयं इतनी शक्ति नहीं है कि उठकर परमेश्वर के पास जाए ताकि वह उसे पापों से मुक्त करे। सो हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं, कि मनुष्य एक ऐसे रोगी व्यक्ति के समान है जिसे कई प्रकार के भयानक रोगों ने जकड़ रखा हो जो उठने, बैठने, चलने वा फिरने के योग्य ही न हो। तो क्या ऐसा व्यक्ति स्वयं किसी वैद्य या डॉक्टर के पास चंगाई पाने के लिए पहुंच सकता है ? कदापि नहीं। और यदि कोई सहायता करने को उसके पास न आए तो वह मनुष्य वहीं पड़े-पड़े नाश हो जाएगा।

सो मित्रो, जब हम परमेश्वर के वचन पवित्र बाइबल में इस प्रकार पढ़ते हैं, कि जब हम निर्बल ही थे तो मसीह ठीक समय पर हमारे लिए मरा, तो इसका अभिप्राय यही है। यानी जब हम अपने पापों के कारण निर्बल और असहाय थे तो मसीह ठीक समय पर हमारी सहायता करने के लिए पृथ्वी पर आ गया। उसने कहा, कि वह खोए हुओं को ढूढ़ने और उनका उद्धार करने आया है। (लूका १९ : १०)। और क्योंकि वह परमेश्वर का पुत्र था, (यूहन्ना ३ : १६), और उसमें कोई पाप न था, (१ पतरस २ : २२), इस कारण वह इस योग्य था कि वह मनुष्य को उठाकर परमेश्वर के पास पहुंचाए।

किन्तु, मनुष्य के भीतर पाप की उपस्थिति इस बात की अनुमति

नहीं देती कि मनुष्य परमेश्वर के पास पहुंचे। सो जब हम बिल्कुल निर्बल और असहाय थे, यीशु ने हमें परमेश्वर तक पहुंचने के योग्य बनाने के लिए, हमारे सब पापों को अपने ऊपर ले लिया, और हमारे पापों के बदले जो दन्ड हमें मिलनेवाला था उस दन्ड को उस ने परमेश्वर की इच्छा से स्वयं अपने ही ऊपर ले लिया। पवित्र बाइबल में लिखा है, "वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिए हुए क्रूस पर चढ़ गया, जिस से हम पापों के लिए मर करके धार्मिकता के लिए जीवन बिताएं : उसी के मार खाने से तुम चगे हुए।" (१ पतरस २ : २४)। प्रभु यीशु ने कहा, "हे सब परिश्रम करनेवालो और बोझ से दबे हुए लोगो, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूंगा।" (मत्ती ११ : २८)। सो मित्रो, इस प्रकार हम देखते हैं, कि यीशु हमारा सच्चा सहायक है, वह हम सब का सहायक है, क्योंकि उसने हम सब की सहायता की है।

परन्तु यीशु न केवल हमारा सहायक ही है, किन्तु वह हम सबके पापों का प्रायश्चित भी है। क्योंकि वह हमारे बदले में मारा गया। प्रायश्चित का अर्थ है, अपराध के लिए बराबर का दन्ड उठाना, या अपराध से हुई हानि को पूरा करने के लिये बराबर का बलिदान देना। मेरे विचार में, प्रायश्चित के अर्थ को और भी अधिक अच्छी तरह से समझने के लिये हमें पवित्र बाइबल में लिखे प्रेरित पौलुस के इन शब्दों को देखना चाहिए : जहाँ वह कहता है, "इसलिए कि सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं। परन्तु उसके अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में है, सेंत-मेंत धर्मी ठहराए जाते हैं। उसे परमेश्वर ने उसके लोहू के कारण एक ऐसा प्रायश्चित ठहराया, जो विश्वास करने से कार्यकारी होता है, कि जो पाप पहिले किए गए और जिनकी परमेश्वर ने अपनी सहनशीलता से आनाकानी की; उनके विषय में वह अपनी धार्मिकता प्रगट करे।" (रोमियों ३ : २३-२५)।

सो हम देखते हैं, कि परमेश्वर ने अपने पुत्र यीशु को उसके लोहू

के कारण हमारे पापों का प्रायश्चित ठहराया। अर्थात, यीशु का वह लोहू जो उसने क्रूस के ऊपर से बहाया हमारे पापों के बदले में एक ऐसा दाम था जो परमेश्वर को स्वीकारय था। इसी कारण, अपनी मृत्यु से कुछ ही घण्टे पहिले जब प्रभु यीशु ने प्रभु-भोज की नियुक्ति की थी, तो हम देखते हैं, कि उसने रोटी लेकर आशीष माँगकर तोड़ी और अपने चेलों को देकर कहा, कि यह मेरी देह है, और भविष्य में मेरी देह को स्मरण करने के लिए तुम इसी प्रकार रोटी में से तोड़कर खाया करना; और फिर हम देखते हैं, कि उसने दाखरस, अर्थात अंगूर का रस लिया, और धन्यवाद देकर अपने चेलों को देकर कहा, कि लो, इसमें से पीओ, और मेरे उस लोहू को स्मरण करने के लिये तुम इसी प्रकार किया करना, जो बहुतों के लिए पापों की क्षमा के निमित्त बहाया जाता है। (मत्ती २६ : २६-२८; मरकुस १४ : २२-२५; लूका २२ : १४-२०; १ कुरिन्थियों ११ : २३-२६)।

अपनी मृत्यु, और गाड़े जाने, और जी उठने के पश्चात प्रभु यीशु ने अपने चेलों को यह कहकर भेजा कि "तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो। जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा। वह दोषी ठहराया जाएगा।" (मरकुस १६ : १५-१६)।

मित्रो, प्रभु यीशु ने हमारी सहायता के लिये, और हमारे पापों का प्रायश्चित करने के लिये, कितना महान् कार्य किया है— और यह सब उसने इसलिए किया ताकि हम अपने पापों से उद्धार पाएं। सो अब हमारा कर्त्तव्य यह है कि हम उसकी आज्ञाओं को मानें।

यीशु आप का सहायक है; वह आपके पापों का प्रायश्चित है। उस पर विश्वास कीजिए, और उसकी आज्ञाओं को मानिए। परमेश्वर अपने धर्म के मार्ग पर चलने लिए आप सब को सामर्थ दे।

— :o: —

मसीह में धन्य

मित्रो,

हमें परमेश्वर का वास्तव में बड़ा ही धन्यवाद करना चाहिए कि उसके अनुग्रह से हम एक ऐसे देश में रहते हैं जहां हमें धार्मिक स्वतंत्रता और उसके वचन को सुनने तथा सुनाने की पूरी आज़ादी प्राप्त है। क्योंकि हम जानते हैं, कि आज भी संसार में बहुतेरे ऐसे लोग हैं जो ऐसे स्थानों पर रहते हैं जहां धार्मिक स्वतन्त्रता और परमेश्वर के वचन को पढ़ने और सुनाने की स्वतंत्रता प्राप्त नहीं है। उनके पास कोई ऐसा साधन नहीं है जिसके द्वारा वे परमेश्वर के वचन का अध्ययन कर सकें। अकसर हमारे घरों में बाइबल की एक या दो या इस से भी अधिक प्रतियाँ उपलब्ध होती हैं; और हम जब चाहें, किसी भी भाषा में, बाइबल ख़रीद सकते हैं। परन्तु मित्रो, संसार में ऐसे भी लोग हैं जो बाइबल की केवल एक प्रति खरीदने के लिए अपना पूरा वेतन देने को तैयार हैं। किन्तु उनके यहाँ बाइबल उपलब्ध नहीं है, और न वे उसे कहीं से प्राप्त कर सकते हैं, क्योंकि वे ऐसे स्थानों पर रहते हैं जहाँ उन्हें धार्मिक स्वतंत्रता प्राप्त नहीं है।

बाइबल में सबसे अधिक कठिन समझी जानेवाली पुस्तक का नाम है प्रकाशितवाक्य की पुस्तक। यह पुस्तक पहिली शताब्दि के अन्त में एक ऐसे समय में लिखी गई थी जब कि मसीह की कलीसिया को एक बहुत बड़े उपद्रव का सामना करना पड़ रहा था। और इसका विशेष कारण यह था कि उस समय रोमी सम्राट ने अपने आपको परमेश्वर के तुल्य बना लिया था। वह चाहता था कि पूरे राज्य में लोग केवल उसी की अराधना वा उपासना करें। और इसी अभिप्राय से उसने राज्य भर

में अपनी मूर्त्तियाँ बनवाकर खड़ी करवा दी थीं और उसने यह आज्ञा निकलवाई कि जो कोई उसकी पूजा न करेगा उसे कड़ा दंड दिया जाएगा। स्वभाविक ही है, कि इस प्रकार की आज्ञा का प्रभाव मसीही लोगों पर कुछ भी न पड़ा, क्योंकि वे केवल सच्चे वा जीवते परमेश्वर की ही उपासना करते हैं, और उसके अतिरिक्त किसी भी मनुष्य या मूर्ति के सामने कभी नहीं झुकते। किन्तु जब राजा ने देखा कि मसीही लोग उसकी आज्ञा का पालन नहीं कर रहे हैं तो उसने उन पर तरह-तरह से अत्याचार करना आरम्भ कर दिया; उन्हें लेन-देन करने से रोका जाने लगा, उनकी सम्पत्ति इत्यादि छीनी जाने लगी, और बहुतेरे जेलखानों में डाले गए, और कुछ को मरवा डाला गया। प्रतिदिन उन्हें अपने विश्वास के कारण अनेको प्रकार के जोखिमों, दुखों, और मृत्यु का सामना करना पड़ रहा था। परन्तु परमेश्वर उन्हें नहीं भूला था! प्रेरित यूहन्ना, जो उन दिनों मसीह के सुसमाचार के कारण बन्दी था, उसके ऊपर तभी प्रभु ने अपने विश्वासियों के लिए इन बातों को प्रकाशित किया; जिन्हें आज हम प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में पढ़ते हैं। इस पुस्तक में परमेश्वर ने अपने उन लोगों को, जो मसीह के कारण सताए और मरवाए जा रहे थे, यह संदेश दिया : कि परमेश्वर और उसके लोगों का विरोध करनेवाले लोग उसके क्रोध से कभी न बचेंगे और वे जो उसके प्रति अपनी मृत्यु तक विश्वासी बने रहेंगे, वे अपना प्रतिफल कभी न खोएँगे। परमेश्वर ने इस पुस्तक में लिखी बातों के द्वारा अपने विश्वासियों को सांत्वना, ढांढस और हियाव दिलाया; और उन्हें इस बात का आश्वासन दिलाया कि वह उनके साथ है और इस कारण अन्त में विजय उन्हीं की होगी। इसी पुस्तक के चौदहवें अध्याय के तेरहवें पद में प्रेरित यूहन्ना यूँ कहता है, "और मैं ने स्वर्ग से यह शब्द सुना, कि लिख, जो मुरदे प्रभु में मरते हैं वे अब से धन्य हैं, आत्मा कहता है, हाँ, क्योंकि वे अपने परिश्रमों से विश्राम पाएंगे, और उनके कार्य उनके साथ हो लेते हैं।"

यहाँ हम देखते हैं, कि वह उन लोगों को जो मरते हैं धन्य कह रहा है। परन्तु वह यह नहीं कह रहा है कि सभी लोग जो मरते हैं धन्य हैं, किन्तु यहां एक विशेष प्रकार के लोगों के बारे में कहा जा रहा है, अर्थात् वे जो प्रभु में मरते हैं। परन्तु इसका अर्थ क्या है ? मसीह में मरने के कारण लोग धन्य क्यों हैं ?

इस सम्बन्ध में सबसे पहिली बात जो हमें मिलती है, वह यह है कि पवित्र बाइबल के अनुसार जो मनुष्य प्रभु यीशु मसीह में है वह एक नई सृष्टि है। लिखा है, "सो यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है : पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, वे सब नई हो गई।" (२ कुरिंथियों ५ : १७)। मसीह में नई सृष्टि होने के कारण वह मनुष्य एक नया इन्सान है; जो अब मृत्यु के भय में नहीं परन्तु अनन्त जीवन पाने की आशा में जीवन बिताता है। क्योंकि वह अपने पुराने जीवन को मसीह के साथ बपतिस्मे के द्वारा दफ़ना चुका है, और वह जानता है कि देह से अलग होकर वह परमेश्वर के उस राज्य में प्रवेश करेगा जहाँ आनन्द और महिमा है। प्रेरित पौलुस एक जगह कहता है, "क्योंकि हम जानते हैं कि जब हमारा पृथ्वी पर का डेरा सरीखा घर गिराया जाएगा तो हमें परमेश्वर की ओर से स्वर्ग पर एक ऐसा भवन मिलेगा, जो हाथों से बना हुआ घर नहीं, परन्तु चिरस्थाई है।" (२ कुरिन्थियों ५ : १)। और प्रभु यीशु ने कहा, कि यदि कोई नए सिरे से न जन्मे तो वह परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता। (यूहन्ना ३ : ३)। सो इसलिए, क्योंकि मसीह में नई सृष्टि होने के कारण मनुष्य परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करेगा, वह वास्तव में धन्य है।

और फिर, एक अन्य स्थान पर बाइबल में हम यूं पढ़ते हैं : "सो अब जो मसीह यीशु में हैं, उन पर दन्ड की आज्ञा नहीं : क्योंकि वे शरीर के अनुसार नहीं बरन आत्मा के अनुसार चलते हैं।" (रोमियों ८ : १)। पवित्र शास्त्र में जिस बात को सबसे अधिक स्पष्टता से

बार-बार बताया गया है, वह यह है कि मृत्य के पश्चात प्रत्येक मनुष्य परमेश्वर को अपना-अपना लेखा देगा। और वे सब जो पाप के भीतर पाए जाएँगे परमेश्वर से दूर होकर अनन्त विनाश का दन्ड पाएंगे। किन्तु सच्चाई यह है कि प्रत्येक मनुष्य पापी है, और बाइबल में लिखा है कि "यदि हम कहें, कि हम में कुछ भी पाप नहीं तो अपने आपको धोखा देते हैं, और हम में सत्य नहीं।" (१ यूहन्ना १ : ८)। परन्तु मित्रो, क्योंकि प्रभु यीशु मसीह ने हमारे पापों को अपनी देह के ऊपर लेकर हमारे पापों के कारण क्रूस पर मृत्यु दन्ड सहा, इस कारण जब हम मसीह यीशु में होकर अपने परमेश्वर के सम्मुख प्रस्तुत होते हैं, तो वह हमें नहीं परन्तु हमारे उद्धारकर्त्ता प्रभु यीशु मसीह को देखता है, और क्योंकि हम उसके भीतर हैं इसलिए हम पर दन्ड की आज्ञा नहीं होती। क्योंकि मसीह ने हमारे पापों का उचित दाम चुका दिया है। उसके भीतर होने के कारण हम अब परमेश्वर की दृष्टि में पापी नहीं परन्तु धर्मी गिने जाते हैं। यह कहने के बाद, कि यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है : पुरानी बातें बीत गई है. देखो, वे सब नई हो गईं, पवित्र शास्त्र का लेखक आगे यूं कहता है, "और सब बातें परमेश्वर की ओर से हैं, जिस ने मसीह के द्वारा अपने साथ हमारा मेल मिलाप कर लिया, और मेल मिलाप की सेवा हमें सौंप दी है। अर्थात् परमेश्वर ने मसीह में होकर अपने साथ संसार का मेल मिलाप कर लिया, और उनके अपराधों का दोष उन पर नहीं लगाया और उसने मेल मिलाप का वचन हमें सौंप दिया है। सो हम मसीह के राजदूत हैं, मानों परमेश्वर हमारे द्वारा समझाता है : हम मसीह की ओर से निवेदन करते हैं, कि परमेश्वर के साथ मेल मिलाप कर लो। जो पाप से अज्ञात था, उसी को उसने हमारे लिये पाप ठहराया, कि हम उस में होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं।" (२ कुरिन्थियों ५ : १८-२१)।

मित्रो, वास्तव में यह बात सच है कि वे जो मसीह में मरते हैं धन्य हैं, क्योंकि उन पर परमेश्वर की ओर से दन्ड की आज्ञा न होगी। क्योंकि मसीह में होने के कारण उनके पाप क्षमा हो चुके हैं, और इसलिए वे पापी की नाईं नहीं, परन्तु एक धर्मी की नाईं देह से अलग होकर परनेश्वर के सम्मुख पहुंचते हैं। प्रेरित पौलुस के कथनानुसार, "क्योंकि तुम सब उस विश्वास करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की सन्तान हो। और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है।" (गलतियों ३ : २६, २७)। जी हाँ, उन्होंने, जिन्होंने मसीह में बपतिस्मा लिया है मसीह को पहिन लिया है, अर्थात वे मसीह के भीतर हैं। और प्रभु की इस आज्ञा का पालन कोई भी मनुष्य, जो उस पर विश्वास करता है और अपने पापों से मन फिराने के लिए तैयार है कर सकता है।

मित्रो, अब अन्त में मैं चाहता हूं कि हम सब व्यक्तिगत रूप से इस प्रश्न के ऊपर विचार करें, कि क्या मैं मसीह में हूं, या मसीह के बाहर हूं ? इस प्रश्न के दो ही उत्तर हो सकते हैं, अर्थात हां, या नहीं। परन्तु एक बात हम सब के बारे में बिल्कुल एक समान है, अर्थात यह कि हम सब को एक न एक दिन अवश्य ही मरना है। परन्तु मित्रो, धन्य हैं वे जो प्रभु यीशु मसीह में मरते हैं, क्योंकि उन पर दन्ड की आज्ञा न होगी, क्योंकि मसीह में वे एक धर्मी की नाईं मरेंगे, और क्योंकि मृत्यु पश्चात वे परमेश्वर के उस भवन में प्रवेश करेंगे जहां न दुख होगा, न क्लेश होगा, न रोना और न दांतों का पीसना होगा, परन्तु वे अपने सब परिश्रमों से विश्राम पाएंगे।

मित्रो, मेरे मन की यह इच्छा है कि आप इन बातों के ऊपर वास्तव में गम्भीर होकर विचार करें, और मेरी यह प्रार्थना है कि परमेश्वर अपने वचन पर चलने के लिए आपको समझ वा ताकत दे।

—: ० :—

मत्यु पर विजय

मित्रो :

परमेश्वर का धन्यवाद हो कि उसने हमें जीवन और इस समय यह सुन्दर अवसर जीवन के महत्व को समझने के लिए प्रदान किया है। बाइबल में एक जगह मसीह यीशु का एक प्रेरित लिखकर यूं कहता है : "हे मृत्यु तेरी जय कहां रही ? हे मृत्यु तेरा डंक कहां रहा ? मृत्यु का डंक पाप है; और पाप का बल व्यवस्था है। परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें जयवन्त करता है। सो हे मेरे प्रिय भाईयो, दृढ़ और अटल रहो, और प्रभु के काम में सर्वदा बढते जाओ, क्योंकि यह जानते हो, कि तुम्हारा परिश्रम प्रभु में व्यर्थ नहीं है।" (१ कुरिन्थियों १५ : ५५-५८)। आपको याद होगा कि अपने पिछले पाठ में हम ने इस विशेष बात को देखा था कि जो लोग मसीह में मरते हैं वे धन्य हैं, और यहाँ बाइबल का लेखक हमारा ध्यान इस बात के ऊपर दिलाता है, कि प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हम मृत्यु पर विजय प्राप्त करते हैं।

मृत्यु एक ऐसा विषय है जिसके अस्तित्व और सच्चाई से कोई भी मनुष्य इन्कार नहीं कर सकता। वास्तव में, हमारा जन्म ही मरने के लिए हुआ है। हमारे जन्म से हज़ारों वर्ष पूर्व परमेश्वर की ओर से प्रत्येक मनुष्य के लिए मरना निश्चित ठहराया जा चुका था। लिखा है, "इसलिए जैसा एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई, और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, इसलिए कि सबने पाप किया।" (रोमियों ५ : १२)। सो हम देखते

हैं, कि जब आरम्भ में पहिले मनुष्य, अर्थात आदम ने पाप किया था तो उसके पाप के परिणाम स्वरूप मृत्यु जगत में सब मनुष्यों में फैल गई। अर्थात, शारीरिक मृत्यु आदम के पाप का परिणाम है और क्योंकि सम्पूर्ण मनुष्य जाति का जन्म आदम से ही हुआ है इस कारण सभी मनुष्य उसके पाप के परिणाम में सहयोगी हैं। इसलिये लिखा है, कि सब ने पाप किया। किन्तु इसका अभिप्राय यह कदापि नहीं है कि आदम के पाप के कारण परमेश्वर हमें अपराधी ठहराकर नरक में डालेगा, अर्थात जब मनुष्य का जन्म होता है तो वह छोटा नन्हा बालक आदम के पाप के परिणाम स्वरूप शारीरिक रूप से मर सकता है, परन्तु परमेश्वर उसे आदम के पाप के कारण पापी जानकर नरक में न डालेगा। परन्तु आदम के पाप का परिणाम अर्थात शारीरिक मृत्यु उसकी ओर से हर एक मनुष्य के लिये निश्चित है। (इब्रानियों ९ : २७)।

मृत्यु को बाइबल में कई नामों से पुकारा गया है। जैसा कि १ कुरिन्थियों १५ : २६ में हम देखते हैं, कि इसे मनुष्य का अन्तिम बैरी कहा गया है; अय्यूब १८ : १४ में इसे भयंकरता के राजा के नाम से पुकारा गया है; २ शमूएल १४ : १४ में लेखक मृत्यु को सम्बोधित करके कहता है कि वह भूमि पर गिरे हुए जल के समान है, जो फिर उठाया नहीं जाता; और फिर यशायाह ३८ : १२ पद में लेखक कहता है, "मेरा घर चरवाहे के तम्बु की नाईं उठा लिया गया है, मैं ने जोलाहे की नाईं अपने जीवन को लपेट दिया है, वह मुझे तांत से काट लेगा, एक ही दिन में तू मेरा अन्त कर डालेगा।"

सो यद्यपि मृत्यु एक बहुत बड़ी सच्चाई है, परन्तु इस सच्चाई से लगभग सभी मनुष्य भयभीत हो उठते हैं। मृत्यु का भय पृथ्वी पर उतना ही पुराना है जितना कि स्वयं मनुष्य, और उतना ही विश्वव्यापी है, जितना कि स्वयं जीवन। किन्तु मनुष्य मृत्यु से भयभीत क्यों होता है? क्यों वह इसकी सच्चाई को नज़र-अन्दाज़ करके उस से भागना

चाहता है ? निसंदेह, इसके कुछ कारण है, और इससे पहिले कि हम इस विशेष बात के ऊपर विचार करें कि मनुष्य मृत्यु के ऊपर किस प्रकार विजय प्राप्त कर सकता है, आईये हम इन कारणों के बारे में संक्षिप्त में देखें।

मनुष्य मृत्यु से डरता है, क्योंकि वह जीवन से प्रेम करता है। वह जीवन को अपनी सबसे विशेष और प्रमुख सम्पत्ति मानता है, और इसीलिए उसे किसी कीमत पर खोना नहीं चाहता, वह उस से लिपटा रहना चाहता है और उसे बचाने के लिए अन्त तक प्रयत्नशील रहता है। किन्तु क्योंकि मृत्यु जीवन की शत्रु है इस कारण मनुष्य को उस से भय लगता है।

हम लागों के बीच में रहना चाहते हैं। हम किसी ऐसे स्थान पर नहीं रहना चाहते जहाँ कोई भी मनुष्य न हो। हम लोगों के साथ यात्रा करते हैं और अपने निश्चित स्थान पर पहुंच जाते हैं। लेकिन मृत्यु एक ऐसी यात्रा है, एक ऐसा अनुभव है जिसका सामना हमें अकेले ही करना पड़ता है।

मृत्यु एक ऐसी वस्तु है, जो हमारे मित्रों, सम्बन्धियों और हमारे चाहनेवालों से हमें सदा के लिये जुदा कर देती है। संसार में कुछ ऐसे लोग हैं; जिनसे हम बड़ा ही प्रेम करते हैं, हम हर समय उनके पास रहना चाहते हैं, हम उनसे बातें करना चाहते हैं और अपना सुख-दुःख उनके साथ बाँटना चाहते हैं। संसार में बहुतेरी ऐसी वस्तुएँ हैं जिनसे हमें बड़ा लगाव हो जाता है, हम उनकी देखभाल करते हैं, उन्हें सम्भाल कर रखते हैं, और उनसे अलग नहीं होना चाहते। किन्तु कभी-कभी जब हमारा ध्यान मृत्यु के ऊपर जाता है तो एक बहुत बड़ा भय हमें आकर घेर लेता है, क्योंकि हम जानते हैं कि मृत्यु ही एक ऐसी वस्तु है जो हमें इन सब वस्तुओं से जिन्हें हम अपना कहते हैं, जिनसे हम प्रेम करते हैं और जिनके करीब हम हर पल

रहने की इच्छा करते हैं, सदा के लिए अलग कर सकती है।

और मित्रो, मनुष्य मृत्यु से इसलिए भी डरता है, क्योंकि मृत्यु का डंक बड़ा ही भयंकर है। और वास्तव में, अभी तक इस सम्बन्ध में हमने जितनी भी बातों के ऊपर विचार किया है, उन सब में यही बात सबसे अधिक भयपूर्ण और दुखदायी है। जैसे कि अभी कुछ देर पहले हमने पढ़ा था, कि मृत्यु का दण्ड पाप है। पाप मनुष्य को जीते जी तो दुख पहुंचाता ही है परन्तु उस से भी अधिक दुःख वह तब पहुँचाता है जब मनुष्य की मृत्यु होती है। एक मरते हुए मनुष्य के लिये उसके पापों का आभास और अनुभव उसके लिये विषैले डंक की नाई प्रमाणित होता है।

परन्तु मित्रो, जबकि मृत्यु इतनी क्रूर, भंयकर और दुखदायी है। दूसरी ओर हम देखते हैं कि परमेश्वर का अनुग्रह हमारी कल्पना से भी बाहर हैं। क्योंकि जैसा कि अभी कुछ ही देर पहिले हमने देखा था, कि प्रेरित पौलुस लिखकर कहता है, "हे मृत्यु तेरी जय कहाँ रही ? हे मृत्यु तेरा डंक कहाँ रहा ? मृत्यु का डंक पाप है, और पाप का बल व्यवस्था हैं। परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें जयवन्त करता है।" फिर पवित्र शास्त्र का लेखक एक अन्य स्थान पर कहता कि प्रभु यीशु मसीह मनुष्यों के बीच रहा और हर एक बात में उनका सहयोगी हुआ, "ताकि मृत्यु के द्वारा उसे जिसे मृत्यु पर शक्ति मिली थी, अर्थात शैतान को निकम्मा कर दे। और जितने मृत्यु के भय के मारे जीवन भर दासत्व में फंसे थे उन्हें छुड़ा ले।" (इब्रानियों २ : १४, १५)। और फिर, एक और जगह हम यूँ पढ़ते हैं कि, "क्योंकि जब मनुष्य के द्वारा मृत्यु आई, तो मनुष्य ही के द्वारा मरे हुओं का पुनरुत्थान भी आया। और जैसे आदम में सब मरते हैं, वैसे ही मसीह में सब जिलाए जाएंगे।" (१ कुरिन्थियों १५ : २१, २२)।

मित्रो, यहाँ प्रभु यीशु मसीह की मृत्यु में हम दो बड़े ही

प्रमुख उद्देश्य देखते हैं, अर्थात पहिला तो यह कि उसने हमारे पापों के दन्ड के स्वरूप में क्रूस के ऊपर मृत्यु दन्ड प्राप्त किया ताकि हम उसके द्वारा दन्ड से बचकर अनन्त जीवन में प्रवेश करें। और दूसरा यह, कि मृत्यु उपरान्त कब्र में रखे जाने के बाद तीसरे दिन जब वह फिर से जी उठा तो इस प्रकार उसने मृत्यु को हराकर उस पर विजय प्राप्त की। सो इसलिये, प्रभु यीशु की मृत्यु के द्वारा न केवल हम अपने पापों से उद्धार ही प्राप्त कर सकते हैं, परन्तु उसके मुरदों में से जी उठने के द्वारा हमारे पास यह आशा भी है कि एक दिन उसी प्रकार हम भी जी उठेंगे। क्योंकि जैसा कि लिखा है, कि जिस प्रकार मनुष्य, अर्थात पहिले आदम के द्वारा जगत में मृत्यु आई, तो मनुष्य ही, अर्थात दूसरे आदम, अर्थात यीशु मसीह के द्वारा मरे हुओं का पुनरुत्थान भी आया। और जैसे आदम की समानता में सब मनुष्य मरते हैं, उसी प्रकार मसीह की समानता पर सब मनुष्य जिलाएँ भी जाएंगे।

तो फिर, मित्रो, मृत्यु का डंक कहाँ रहा ? मृत्यु की जय कहाँ रही ? मृत्यु अवश्य ही हमें कुछ समय के लिये नींद में सुला सकती है, परन्तु अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हम मृत्यु पर जयवन्त होंगे, क्योंकि हम उसमें फिर जी उठेंगे। इसलिए, यदि हम मसीह यीशु में हैं तो हम मृत्यु के भय में नहीं परन्तु जीवन की आशा में रहते हैं। क्योंकि हम जानते हैं कि मसीह में होने के कारण अब हम पर दन्ड की आज्ञा न होगी, क्योंकि हमारा दन्ड हमारे प्रभु ने स्वयं अपने ऊपर ले लिया है, और इसलिए, हम दन्ड पाने के लिए नहीं परन्तु उद्धार पाने के लिए, अनन्त जीवन पाने के लिए जी उठेंगे। (यूहन्ना ५ : २८, २९)।

सो इसलिए, मसीह में होने का अर्थ यह है, कि मैं मृत्यु के अकेलेपन से नहीं डरता, क्योंकि यीशु ने कहा है कि मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं; वह मेरे साथ जीवन में हैं, और वह

मेरे साथ मृत्यु में होगा, और वह मेरे साथ पुनरुत्थान में होगा। मुझे पाप के डंक से भी कोई हानि न होगी, क्योंकि मैं जानता हूं कि उसने मेरे सब पापों को हमेशा के लिए मिटा डाला हैं। और मृत्यु मेरे लिए प्रभु यीशु मसीह के कारण किसी भी प्रकार की हानि का कारण नहीं, परन्तु वास्तव में मेरे लाभ का कारण सिद्ध होगी। क्योंकि मैं इस नाशमान देह से अलग होकर अविनाश को पहिन लूँगा, और इस नाशमान संसार से अलग होकर परमेश्वर के उस राज्य में प्रवेश करूँगा जहाँ हमारा प्रभु और उद्धारकर्त्ता और उसके सब लोग विद्यमान हैं।

किन्तु, मित्रो, क्या आपके पास भी यही आशा है ?

—: o :—

पुनरुत्थान के विषय में पवित्र शास्त्र क्या सिखाता है ?

मित्रो :

अपने पिछले पाठ में हमने मृत्यु और मृत्यु के ऊपर विजय प्राप्त करने के सम्बन्ध में देखा था। और विशेष रूप से हमने यह देखा था कि जिस प्रकार आदम में सब मरते हैं, उसी प्रकार मसीह में सब जिलाए जाएंगे क्योंकि मसीह ने अपने पुनरुत्थान के कारण मृत्यु पर विजय प्राप्त की है। और आज हम मुख्य रूप से यह देखेंगे, कि पवित्र शास्त्र पुनरुत्थान के, अर्थात मुरदों में से जी उठने के बारे में हमें क्या सिखाता है ?

बाइबल के पुराने नियम में यूँ तो अनेक स्थानों पर हम पुनरुथान के विषय में पढ़ते हैं, परन्तु यशायाह २६ : १९ में लिखा है, "तेरे मरे हुए लोग जीवित होंगे, मुरदे उठ खड़े होंगे। हे मिट्टी में बसने-वालो, जागकर जयजयकार करो ! क्योंकि तेरी ओस ज्योति से उत्पन्न होती है, और पृथ्वी मुर्दों को लौटा देगी।" फिर हम नए नियम में देखते हैं, कि प्रभु यीशु ने इस वास्तविकता को अपने आश्चर्यकर्मों द्वारा भी प्रगट किया। एक जगह उसने याईर नाम एक मनुष्य की बारह वर्षीय पुत्री को मृत्यु पश्चात जिलाकर सब लोगों को चकित किया। (मरकुस ५ : २२–४३)। जब वह नाईन नाम के नगर में आया तो उसने कुछ लोगों को एक नवयुवक की अर्थी ले जाते हुए देखा। वह नौजवान अपनी विधवा माँ का एकलौता पुत्र था, यीशु

को उसे देखकर उस पर तरस आया और उस से कहा, कि मत रो। फिर यीशु ने अर्थी के पास आकर ले जानेवालों को रोका और उस नवयुवक को जो मर गया था जिलाकर उसकी मां को सौंप दिया। (लूका ७ : ११–१७) और फिर यूहन्ना ११ अध्याय में हम बैतन्नियाह गाँव के लाज़र के बारे मे पढ़ते हैं जिसको मरे और कब्र के भीतर रखे चार दिन हो चुके थे, परन्तु जब यीशु वहां आया तो उसने कहा, "पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूं, जो कोई मुझ पर विश्वास करता है वह यदि मर भी जाए, तौभी जीएगा। और जो कोई जीवता है, और मुझ पर विश्वास करता है, वह अनन्तकाल तक न मरेगा।"

और फिर उसने लाज़र को कब्र में से बाहर निकल आने की आज्ञा दी, और लिखा है, कि जो मर गया था; वह कफ़न से हाथ पांव बान्धे हुए निकल आया।

और केवल इतना ही नहीं, परन्तु यीशु ने स्वयं अपने पुनरुत्थान के विषय में भी भविष्यद्वाणी की थी। एक जगह हम पढ़ते हैं कि उसने अपने चेलों को बताकर कहा, "कि मुझे अवश्य है, कि यरुशलेम को जाऊँ, और पुरनियों और महायाजकों और शास्त्रियों के हाथ से बहुत दुख उठाऊँ; और मार डाला जाऊँ; और तीसरे दिन जी उठूँ।" (मत्ती १६ : २१)। इसलिए हम पढ़ते हैं, कि जब वह अपने कहे अनुसार क्रूस पर चढ़ाकर मार डाला गया, तो यहूदियों ने रोमी हाकिम पिलातुस के पास जाकर यह आज्ञा मांगी कि यीशु की कब्र की कड़ी निगरानी की जाए, क्योंकि उन्हें डर था, कि कहीं यीशु के चेले आकर उसकी देह को कब्र में से निकाल न ले जाएँ और लोगों को बताने लगें कि वह जी उठा है। सो हम पढ़ते हैं, कि उन्होंने उसकी कब्र के ऊपर एक बहुत बड़ा पत्थर रखा और और उस पर रोमी हाकिम की मुहर लगा दी; और फिर उन्होंने हाकिम के दिये हुए रोमी सिपाहियों के एक जत्थे को वहां तैनात

कर दिया ताकि यीशु की कब्र की रखवाली करें। परन्तु मित्रो, संसार और शैतान की सारी शक्ति और सारी फ़ौजें मिलकर भी परमेश्वर की योजना को असफल नहीं कर सकतीं। लिखा है, कि तीसरे दिन सवेरा होते ही उस स्थान पर एक बड़ा भुइँडोल हुआ, क्योंकि प्रभु का एक दूत स्वर्ग से उतरा और उसने कब्र पर रखे मुहर लगे उस बड़े पत्थर को एक गेंद के समान लुढ़का दिया; और वे सिपाही जो कब्र का पहरा दे रहे थे एकाएक इस घटना से घबराकर, और स्वर्ग दूत के बिजली के से रूप को देखकर मूर्छित हो गए। हम पढ़ते हैं, कि जी उठने के बाद, स्वर्ग में वापस जाने से पहिले, यीशु चालीस दिनों तक पृथ्वी पर रहा और अपने चेलों से मिलता रहा।

परमेश्वर ने अपने पुत्र यीशु मसीह को इस संसार में वास्तव में मरने को ही भेजा था। अपनी योजनानुसार, उसने यीशु को क्रूस के ऊपर बलिदान करवाके उसे हमारे पापों के लिये प्रायश्चित ठहराया; और मृत्यु पश्चात उसे मुर्दों में से जिलाकर परमेश्वर ने हम सब पर प्रगट कर दिया कि यीशु ने एक मनुष्य की समानता में होकर मृत्यु पर विजय प्राप्त की है, और इसलिए उसमें एक दिन सभी मनुष्य जिलाए जाएंगे। परन्तु पुनरुत्थान के उस महान दिन में सब मनुष्यों के जी उठने का एक मुख्य उद्देश्य यह होगा कि परमेश्वर जगत के सारे लोगों का अपने वचनानुसार न्याय करेगा; और पवित्र शास्त्र में लिखा है कि यीशु मसीह को परमेश्वर ने मरे हुओं में से जिलाकर यह बात सब मनुष्यों पर वास्तव में प्रमाणित कर दी है, लेखक कहता है, "इसलिए परमेश्वर अज्ञानता के समयों से आनाकानी करके अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है। क्योंकि उसने एक दिन ठहराया है जिस में वह उस मनुष्य के द्वारा धर्म से जगत का न्याय करेगा, जिसे उसने ठहराया है और उसे मरे हुओं में से जिलाकर, यह बात सब पर प्रमाणित कर दी है।"

(प्रेरितों १७ : ३०, ३१)। स्वयं प्रभु यीशु मसीह ने भी अपनी मृत्यु से पूर्व जताकर कहा था, कि यह सुनकर अचम्भा मत करो कि वह दिन आता है जबकि सारे लोग जी उठेंगे; और फिर प्रभु ने आगे कहा कि "जिन्हों ने भलाई की है वे जीवन के पुनरुत्थान के लिए जी उठेंगे और जिन्हों ने बुराई की है वे दन्ड के पुनरुत्थान के लिये जी उठेंगे।" (यूहन्ना ५ : २९)।

परन्तु जबकि पवित्र शास्त्र बड़ी ही स्पष्टता से हमें बताता है, कि पुनरुत्थान अवश्य ही होगा; और प्रभु के आने पर उसके न्याय का सामना करने के लिये प्रत्येक जन जी उठेगा, तौभी बहुतेरे लोग आज परमेश्वर के वचन की इस मुख्य तथा महत्वपूर्ण शिक्षा का इन्कार करते हैं। परन्तु पुनरूत्थान की सच्चाई को प्रमाणित करने के लिये आज जो सबसे बड़ा और शक्तिशाली प्रमाण दिया जा सकता है वह स्वयं मसीहीयत है, मसीही लोग हैं; और मसीह की कलीसिया है। यदि मसीहीयत आज दुनियाभर में मौजूद है; यदि मसीह की कलीसिया आज पृथ्वी पर विद्यमान है, और यदि हम आज मसीह के सुसमाचार का प्रचार करते हैं, तो इस सब का एक ही कारण है, और वह कारण है : पुनरुत्थान ! और यदि पुनरूत्थान को झूठा प्रमाणित कर दिया जाए, तो मित्रो, मेरा दावा है कि इन में से एक भी वस्तु बाकी न बचेगी। इसमें कोई संदेह नहीं, कि आरम्भ से ही बहुतेरे लोग मसीहीयत और मसीह की कलीसिया के विरोधी रहे हैं, और आज भी हैं, यद्यपि इसका कारण उनके मनों का पूर्वद्वेष और अज्ञानता हैं। परन्तु मैं अपनी बात को फिर दोहरा देना चाहता हूँ : कि यदि कोई भी मनुष्य आज मसीहीयत और मसीह की कलीसिया को ख़त्म करने की कामना अपने मन में रखता है, तो वह सब बातों को छोड़कर केवल मसीह के पुनरूत्थान को झूठा प्रमाणित कर दे। किन्तु, यह असम्भव है। क्योंकि पवित्र शास्त्र, और इतिहास, और तर्क सभी मसीह के मुर्दों में से जी उठने की गवाही देते हैं।

लेकिन फिर भी पुनरूत्थान का इन्कार केवल आज इस आधुनिक युग में ही नहीं किया जा रहा है, किन्तु जैसे कि बाइबल में हम देखते हैं, कि जिन दिनों में प्रेरित पौलुस तथा अन्य प्रेरित मसीह का प्रचार किया करते थे उस समय भी कुछ लोगों को पुनरूत्थान पर संदेह होने लगा था, और इस प्रकार के कुछ लोग कुरिन्थुस नाम के स्थान पर स्वयं कलीसिया में भी मौजूद थे। सो इसलिए हम देखते हैं, कि प्रेरित उन्हें लिखकर यूँ कहता है, "सो जब कि मसीह का यह प्रचार किया जाता है, कि वह मरे हुओं में से जी उठा, तो तुम में से कितने क्योंकर कहते हैं, कि मरे हुओं का पुनरूत्थान है ही नहीं ? यदि मरे हुओं का पुनरुत्थान है ही नहीं, तो मसीह भी नहीं जी उठा। और यदि मसीह नहीं जी उठा, तो हमारा प्रचार करना भी व्यर्थ है; और तुम्हारा विश्वास भी व्यर्थ है। बरन हम परमेश्वर के झूठे गवाह ठहरे, क्योंकि हमने परमेश्वर के विषय में यह गवाही दी, कि उसने मसीह को जिला दिया यद्यपि नहीं जिलाया, यदि मरे हुए नहीं जी उठते, और यदि मुरदे नहीं जी उठते, तो मसीह भी नहीं जी उठा और यदि मसीह नहीं जी उठा, तो तुम्हारा विश्वास व्यर्थ है; और तुम अब तक अपने पापों में फंसे हो। बरन जो मसीह में सो गए हैं, वे भी नाश हुए। यदि हम केवल इसी जीवन में मसीह से आशा रखते हैं तो हम सब मनुष्यों से अधिक अभागे हैं। परन्तु सचमुच मसीह मुरदों में से जी उठा है। और जो सो गए हैं, उन में पहिला फल हुआ।" (१ कुरिन्थियों १५ : १२–२०)। सो इस प्रकार हम देखते हैं, कि मसीहीयत का सारा आधार ही मसीह का पुनरुत्थान है, और मसीह का पुनरुत्थान स्वयं हमारे पुनरुत्थान का एक निश्चित प्रमाण है।

पवित्र बाइबल की शिक्षानुसार, हम देखते हैं कि जब हम बपतिस्मा लेते हैं तो उस समय जल के भीतर गाड़े जाने और उसमें से बाहर आने के द्वारा हम मसीह की मृत्यु और उसके कब्र के भीतर गाड़े

जाने और उसके जी उठने को प्रदर्शित करते हैं। जिन लोगों ने मसीह में बपतिस्मा लिया था, प्रेरित पौलुस उन्हें लिखकर एक जगह कहता है, "क्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, तो उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया? सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें। क्योंकि यदि हम उसकी मृत्यु की समानता में उसके साथ जुट गए हैं, तो निश्चय उसके जी उठने की समानता में भी जुट जाएंगे।" (रोमियों ६ : ३–५)।

परमेश्वर आप सब को अपने वचन को समझने और उस पर चलने के लिए सामर्थ दे।

—: o :—

हमें क्यों विश्वास करना चाहिए कि बाइबल परमेश्वर का वचन है ?

मित्रो :

पवित्र बाइबल को सच्चे वा जीवते परमेश्वर का वचन प्रमाणित करनेवाले प्रमाण यूं तो बहुतेरे हैं, जैसे कि वैज्ञानिक तथा पुरातत्व-सम्बन्धि खोजें, इत्यादि, किन्तु एक बड़ा ही आवश्यक और बहुत ही महत्वपूर्ण प्रमाण इस सम्बन्ध में हमें उन भविष्यद्वाणियों में मिलता है जिनके बारे में हम बाइबल के पहिले भाग अर्थात पुराने नियम में पढ़ते हैं। अकसर कुछ लोग यह प्रश्न उठाते हैं, कि बाइबल में लिखी बातों को हम परमेश्वर का वचन क्यों कहते वा मानते हैं ? मित्रो, इसका मुख्य कारण यही है, जैसा कि अभी मैं ने आपसे कहा, कि बाइबल में कुछ ऐसी बातें लिखी हैं जिन्हें पढ़कर हम केवल इसी निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि इस पुस्तक का मनुष्य द्वारा लिखा जाना असम्भव है, और यह बात इस बात को भी प्रमाणित करती है कि इस पुस्तक का लिखवाने वाला स्वयं परमेश्वर के अतिरिक्त और कोई नहीं हो सकता। यद्यपि इस पुस्तक को लिखवाने में परमेश्वर ने मनुष्यों के हाथों का उपयोग अवश्य किया, परन्तु जिन बातों को इस किताब में हम पढ़ते हैं उनका मनुष्य की बुद्धि से लिखा जाना बिल्कुल असम्भव था।

उदाहरण के रूप से, आज हम बहुतेरी ऐसी बातों से परीचित हैं जिनके बारे में हमारे पूर्वज कल्पना तक भी नहीं कर सकते थे, क्योंकि

वे लोग उस समय इस पृथ्वी पर रहते थे जबकि वैज्ञानिकों ने इन बातों की खोज नहीं की थी। जैसे कि आज हम जानते हैं, कि उनका विश्वास था कि पृथ्वी ऐसी समतल है कि यदि कोई मनुष्य इस पर एक ही दिशा में चलता रहे तो वह एक ऐसे छोर पर पहुंच जाएगा जहां से वह गिरकर नाश हो जाएगा। फिर उनका अनुमान था, कि पृथ्वी किसी वस्तु या जन्तु या किसी मनुष्य के ऊपर ठहरी हुई है, और वे इस बात की कल्पना भी नहीं कर सकते थे कि पृथ्वी पर एक ही समय में कहीं दिन और कहीं रात हो सकती है। परन्तु आज विज्ञान और प्रगति के इस काल में हम सच्चाई से परिचित हैं। हम जानते हैं कि पृथ्वी गोल है, हम जानते हैं कि पृथ्वी किसी भी वस्तु इत्यादि के ऊपर टिकी नहीं है, और हम जानते हैं कि जब पृथ्वी पर किसी एक स्थान पर दिन होता है तो उसी समय एक दूसरे स्थान पर रात हो सकती है। परन्तु मित्रो, आज से हज़ारों वर्ष पूर्व जिन लोगों ने बाइबल की पुस्तकों को लिखा था उन्हें इन बातों का सच्चा ज्ञान कैसे हुआ ? क्योंकि वे लिखकर कहते हैं, कि पृथ्वी एक गोल घेरा है; और पृथ्वी किसी भी वस्तु पर टिकी नहीं है; और एक अन्य लेखक कहता है कि जिस समय प्रभु यीशु वापस आएगा तो उस समय कहीं रात होगी और कहीं दिन। सो इन बातों को ध्यान में रखकर, हमारे सामने फिर वही प्रश्न आता है, कि जबकि बाइबल के ये लेखक, जिन्होंने इन बातों को और इसी प्रकार की अन्य बातों को इस पुस्तक में लिखा है, आज से हज़ारों वर्ष पूर्व पृथ्वी पर उस समय रहते थे जबकि मनुष्यों को इन बातों का ज्ञान नहीं था, तो फिर उन्होंने बाइबल में इन सब बातों को किस प्रकार लिख दिया ?

इसी तरह, बाइबल में अनेक ऐसे नगरों, गांवों, नदियों, इत्यादि के बारे में हम पढ़ते हैं जो आज भी संसार में मौजूद हैं जबकि उनके बारे में बाइबल में हज़ारों वर्ष पूर्व लिखा गया था। सो इस प्रकार हम देखते हैं, कि बाइबल भूगोल तथा ऐतिहासिक दृष्टिकोण से भी सच्ची है।

किन्तु, मान लीजिए, यदि इस समय आप मुझ से पांच सौ या एक हज़ार मील दूर हों, और मैं यहीं बैठे-बैठे आपके बारे में आपको प्रत्येक बात बता दूं और भविष्य में आपके साथ क्या-क्या घटनेवाला है उसका भी वर्णन कर दूं; और वे सब बातें भविष्य में आपके साथ बिल्कुल ठीक वैसे ही घट जाएँ, जैसे कि मैं कहूं, तो आप मेरे बारे में क्या कहेंगे ? निश्चय ही, आप मुझे एक साधारण मनुष्य नहीं समझेंगे। और क्योंकि भविष्य का ज्ञान केवल परमेश्वर को ही है, इस कारण आप अवश्य ही मानेंगे कि परमेश्वर कि प्रेरणा के द्वारा ही मैंने वे सब बातें आपको सचमुच बताई हैं। ठीक यही बात हम बाइबल के पुराने नियम में लिखी भविष्यद्वाणियों के बारे में देखते हैं। पुराने नियम में ये भविष्यद्वाणियाँ मसीह से सैकड़ों तथा हज़ारों वर्ष पूर्व लिखी गई थीं, किन्तु मसीह के संसार में आने पर ये भविष्यद्वाणियां बिल्कुल ठीक उसी प्रकार से पूर्ण हुईं, जैसे कि मान लीजिए कोई व्यक्ति एक या दो हज़ार मील दूरी से एक तीर छोड़े और वह बिल्कुल सही निशाने पर जा लगे ! परन्तु क्योंकि इस प्रकार की बात किसी भी मनुष्य के लिये सम्भव नहीं है, इसलिये, इसमें कोई संदेह नहीं कि भविष्य में होनेवाली इन बातों का लिखवानेवाला वास्तव में वह सर्वज्ञानी परमेश्वर ही था जिसने सम्पूर्ण सृष्टि को रचा है। और जो भूत और वर्तमान और भविष्य का पूर्ण ज्ञान रखता है।

परन्तु, अब मैं आपके सामने कुछ ऐसी भविष्यद्वाणियों का वर्णन करने जा रहा हूँ जो मसीह से सैकड़ों तथा हज़ारों वर्ष पूर्व उसके बारे में की गई थीं; और जिनके बारे में हम बाइबल के पहले भाग, अर्थात पुराने नियम में पढ़ते हैं। इसी के साथ, हम यह भी देखेंगे, कि मसीह के आने पर उसके विषय में ये भविष्यद्वाणियां कब और कहाँ पूरी हुईं।

इस सम्बन्ध में सबसे पहली भविष्यद्वाणी का वर्णन हमें बाइबल में उत्पत्ति ३ : १५ में मिलता है, जहाँ हम देखते हैं कि जब शैतान ने

अदन की बाटिका में हव्वा को पाप करने के लिए उकसाया तो परमेश्वर ने शैतान से कहा कि "मैं तेरे और इस स्त्री के बीच में, और तेरे वंश और इसके वंश के बीच में बैर उत्पन्न करूंगा, वह तेरे सिर को कुचल डालेगा, और तू उसकी एड़ी को डसेगा।" इस कथन के हज़ारों वर्ष बाद जब प्रभु यीशु मसीह ने एक स्त्री से जन्म लिया और जब वह हमारे पापों के कारण क्रूस के ऊपर चढ़ाया गया, तो शैतान ने अवश्य ही उसे डसा और कुछ समय के लिये उसे नींद में सुला दिया। परन्तु तीसरे दिन जब वह परमेश्वर की सामर्थ से पुनः जीवित हो उठा, तो इस प्रकार उसने शैतान के सिर को कुचला और उसे सदा के लिये हरा दिया। गलतियों ४ : ४ में प्रेरित पौलुस कहता है, "परन्तु जब समय पूरा हुआ, तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा, जो स्त्री से जन्मा, और व्यवस्था के आधीन उत्पन्न हुआ।" "ताकि व्यवस्था के आधीनों को मोल लेकर छुड़ा ले।" (पद ५)।

मसीह से एक हज़ार वर्ष पूर्व दाऊद ने इस विषय में कि वह किस प्रकार अपनी मृत्यु से पूर्व अपने ही एक मित्र द्वारा पकड़वाया जाएगा यों लिखा था, "मेरा परम मित्र जिस पर मैं भरोसा रखता था, जो मेरी रोटी खाता था, उसने भी मेरे विरुद्ध लात उठाई है।" (भजन० ४१:६)। और न केवल यह, परन्तु भविष्यद्वकता जकर्याह ने अपनी पुस्तक के ११:१२ में इस बारे में भी भविष्यद्वाणी की थी कि मसीह किस दाम पर पकड़वाया जाएगा। वह कहता है, "तब मैंने उनसे कहा, यदि तुमको अच्छा लगे तो मेरी मजदूरी दो, और नहीं तो मत दो। तब उन्होंने मेरी मजदूरी में चाँदी के तीस टुकड़े तौल दिए।" सैकड़ों वर्ष बाद जब यहूदा नाम के यीशु मसीह के एक चेले ने उसे महायाजकों के हाथ पकड़वाया तो लिखा है, कि उसने उनके पास जाकर कहा, "यदि मैं उसे तुम्हारे हाथ पकड़वा दूं, तो मुझे क्या दोगे? उन्होंने उसे तीस चांदी के सिक्के तौलकर दे दिए।" (मत्ती २६:१५)।

इसी प्रकार, उन भविष्यद्वक्ताओं ने मसीह के दुख उठाने, उसकी मृत्यु, गाड़े जाने, और जी उठने, और स्वर्ग पर वापस उठा लिए

जाने के विषय में भी कई स्थानों पर भविष्यद्वाणी की थी। यशायाह ५३:४-६ में भविष्यद्वक्ता ने मसीह के बारे में लिखा था, निश्चय उसने हमारे रोगों को सह लिया और हमारे ही दुखों को उठा लिया, तौ भी हमने उसे परमेश्वर का मारा कूटा और दुर्दशा में पड़ा हुआ समझा। परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के हेतु कुचला गया। हमारी ही शान्ति के लिये उस पर ताड़ना पड़ी, कि उसके कीड़े खाने से हम लोग चंगे हो जाएं। हम तो सब के सब भेड़ों की नाईं भटक गए थे, हम में से हर एक ने अपना-अपना मार्ग लिया, और यहोवा ने हम सभों के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया।" यशायाह की इस भविष्यद्वाणी के लगभग आठ सौ वर्ष बाद जब मसीह परमेश्वर के होनहार के ज्ञान के अनुसार क्रूस के ऊपर चढ़ाया गया, तो ये सब बातें उस समय पूर्ण हुईं। प्रेरित पौलुस रोमियों ४:२५ में कहता है, "वह हमारे अपराधों के लिये पकड़वाया गया, और हमारे धर्मी ठहरने के लिये जिलाया भी गया।" और आगे एक और स्थान पर वह यों कहता है, "जो पाप से अज्ञात था उसी को परमेश्वर ने हमारे लिये पाप ठहराया, कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धर्मिकता बन जाएं।" (२ कुरिन्थियों ५:२१)। यशायाह ने अपनी पुस्तक के इसी अध्याय में यह भी कहा था, कि वह तुच्छ जाना जाता और मनुष्यों का त्यागा हुआ था; जैसे कि हम जानते हैं कि यहूदी और अन्य जाति के लोग सभी उसे तुच्छ जानते थे। उसने यह भी कहा था, कि मृत्यु के समय वह अपराधियों के संग गिना गया, और मृत्यु के पश्चात वह धनवान का संगी हुआ। नए नियम में हम पढ़ते हैं, कि जब यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया था तो उसके दाएं और बाएं दो अपराधियों को भी क्रूसों पर चढ़ाया गया था, और मृत्यु के बाद यूसुफ नाम के एक धनवान ने उसकी लोथ को हाकिम से मांगकर अपनी नई कब्र के भीतर दफ़ना दिया था। यशायाह ने यह भी कहा था, कि वह अपने प्राणों का दुख उठाकर उसे देखेगा और तृप्त होगा। और यह

बात उस समय पूरी हुई जब प्रभु यीशु मसीह अपनी मृत्यु पश्चात तीसरे दिन फिर जी उठा।

मित्रो, यूं तो बाइबल में लिखी इस प्रकार की अनेक अन्य भविष्यद्वाणियों पर भी विचार यहाँ किया जा सकता है, परन्तु समय के अभाव के कारण ऐसा करना अभी सम्भव नहीं है। किन्तु मेरा विश्वास है, कि जिन बातों पर अभी हमने विचार किया है, इन सबसे आपको यह समझने में अवश्य ही सहायता मिलेगी कि बाइबल में लिखी बातों को परमेश्वर का वचन क्यों कहा जाता है। और यदि आप प्रभु यीशु मसीह में विश्वास करेंगे, और अपने सब पापों से मन फिराएंगे, और उसकी आज्ञानुसार अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेंगे, तो बाइबल में लिखा है कि परमेश्वर आपके सब पापों से आपका उद्धार करेगा।

परमेश्वर अपने वचन पर विश्वास लाने और उस पर चलने के लिये आप सबको ताकत दे।

— :o: —

परमेश्वर ने अपने पुत्र को क्यों छोड़ दिया ?

मित्रो :

आपको याद होगा कि पिछली बार अपने अध्ययन में हमने कुछ ऐसी भविष्यद्वाणियों के बारे में देखा था जो मसीह से सैकड़ों वर्ष पूर्व उसके सम्बन्ध में पुराने नियम अर्थात बाइबल के पहिले भाग में लिखी गई थीं। और विशेष रूप से हमने इस बात को देखा था, कि यद्यपि मसीह से सम्बन्धित ये भविष्यद्वाणियाँ मसीह के इस संसार में आने से सैकड़ों वर्ष पूर्व पुराने नियम में लिखी गई थीं, किन्तु प्रभु यीशु मसीह के आने पर वे सभी बातें उसमें ज्यों की त्यों पूरी हुई। परन्तु श्रोताओ, यदि बाइबल को स्वयं परमेश्वर ने ही अपनी प्रेरणा द्वारा न लिखवाया होता तो ऐसा कदापि सम्भव न होता। इसलिए हमें यह विश्वास करना चाहिए कि बाइबल वास्तव में परमेश्वर का वचन है, और उसमें लिखी प्रत्येक आज्ञा परमेश्वर की आज्ञा है।

अपने पिछले अध्ययन को ध्यान में रखकर आज हम मसीह के सम्बन्ध में लिखी कुछ और बातों के बारे में देखेंगे। जैसा कि मैं ने पहिले कहा, कि मसीह से सम्बन्धित ये बातें वास्तव में उसके जन्म से सैकड़ों वर्ष पूर्व लिखी गई थीं, परन्तु क्योंकि इन बातों का लिखवानेवाला स्वयं परमेश्वर था, इस कारण उसके द्वारा कही गई प्रत्येक बात मसीह के आने पर पूरी हुई। दाऊद, जो मसीह से लगभग एक हज़ार साल पहिले हुआ था, और जिसके द्वारा मसीह के सम्बन्ध में लिखी कुछ भविष्यद्वाणियों पर हमने पूर्व विचार किया

था, भजन संहिता की पुस्तक के २२ वें अध्याय में कुछ ऐसी बातों का वर्णन करता है, जिन्हें पढ़कर ऐसा लगता है कि मानो वह मसीह से एक हज़ार वर्ष पहिले न होकर स्वयं मसीह के समय में ही रहा हो । इस अध्याय में वह उन बातों का वर्णन करता है जो प्रभु यीशु मसीह के क्रूस के ऊपर घटीं । और यद्यपि उन बातों को, जैसा कि हमने देखा, उसने घटने से सैकड़ों वर्ष पूर्व लिखा था तौ भी ऐसा प्रतीत होता है कि मानो दाऊद ने स्वयं ही मसीह के क्रूस के पास खड़े होकर उन सब बातों को देखा वा सुना हो और बाद में उनके बारे में लिखा हो ।

सो, अब आईए, देखें, कि उसने क्या लिखा था । हम इस जगह यूँ पढ़ते हैं : "हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया ? तू मेरी पुकार से और मेरी सहायता करने से क्यों दूर रहता है; मेरा उद्धार कहाँ है ? हे मेरे परमेश्वर, मैं दिन को पुकारता हूं परन्तु तू उत्तर नहीं देता, और रात को भी मैं चुप नहीं रहता । परन्तु हे तू जो इस्त्राएल की स्तुति के सिंहासन पर विराजमान है, तू तो पवित्र है । हमारे पुरखा तुझी पर भरोसा रखते थे, वे भरोसा रखते थे, और तू उन्हें छुड़ाता था । उन्होंने तेरी दोहाई दी और तू ने उनको छुड़ाया । वे तुझी पर भरोसा रखते थे और कभी लज्जित न हुए । परन्तु मैं तो कीड़ा हूं, मनुष्य नहीं, मनुष्यों में मेरी नाम धराई है, और लोगों में मेरा अपमान होता है । वे सब जो मुझे देखते हैं मेरा ठट्ठा करते हैं, और ओंठ बिचकाते और यह कहते हुए सिर हिलाते हैं, कि अपने को यहोवा के वश में कर दे वही उसको छुड़ाए, वह उसको उबारे क्योंकि वह उससे प्रसन्न है । परन्तु तू ही ने मुझे गर्भ से निकाला जब मैं दूध पिउवा बच्चा था, तब ही से तू ने मुझे भरोसा रखना सिखलाया । मैं जन्मते ही तुझी पर छोड़ दिया गया, माता के गर्भ ही से तू मेरा ईश्वर है । मुझ से दूर न हो क्योंकि संकट निकट है, और कोई सहायक नहीं । बहुत से साँढ़ों ने मुझे घेर

लिया है, बाशान के बलवन्त साँढ़ मेरे चारों ओर मुझे घेरे हुए हैं। वह फाड़ने और गरजनेवाले सिंह की नाईं मुझ पर अपना मुँह पसारे हुए हैं। मैं जल की नाईं बह गया, और मेरी सब हड्डियों के जोड़ खुल गए। मेरा हृदय मोम हो गया, वह मेरी देह के भीतर पिघल गया मेरा बल टूट गया, मैं ठीकरा हो गया, और मेरी जीभ मेरे तालू से चिपक गई, और तू मुझे मारकर मिट्टी में मिला देता है। क्योंकि कुत्तों ने मुझे घेर लिया है, कुकर्मियों की मन्डली मेरे चारों ओर मुझे घेरे हुए है, वे मेरे हाथ और मेरे पैर छेदते हैं। मैं अपनी सब हड्डियाँ गिन सकता हूं, वे मुझे देखते और निहारते हैं, वे मेरे वस्त्र आपस में बांटते हैं, और मेरे पहिरावे पर चिट्ठी डालते हैं। परन्तु हे यहोवा तू दूर न रह! हे मेरे सहायक, मेरी सहायता के लिए फुर्ती कर! मेरे प्राण को तलवार से बचा, मेरे प्राण को कुत्तों के पंजे से बचा ले।"

यह वर्णन, श्रोताओ, जो अभी हमने पवित्र बाइबल में से पढ़ा, इसमें उन बातों का उल्लेख है जो उस समय पर घटीं जब प्रभु यीशु मसीह क्रूस पर चढाया गया था। यूँ तो ये बातें, जैसा कि हमने पहिले भी देखा था, घटने से लगभग एक हज़ार वर्ष पूर्व पुराने नियम में लिखी गई थीं, किन्तु जब हम नए नियम में से मत्ती २६ तया २७ अध्यायों को खोलकर पढ़ते हैं, जहाँ हम मसीह के पकड़वाए जाने के बारे में तथा क्रूस पर चढ़ाए जाने के बारे में देखते हैं, तो दाऊद द्वारा पहिले से लिखे गए इस वर्णन की प्रत्येक बात को हम उसमें पूरा होते देखते हैं। सबसे पहले, तो इस कथन में लेखक उन शब्दों का उल्लेख करता है जो प्रभु यीशु ने क्रूस पर से अपने आपको असहाय पाकर कहे थे, अर्थात यह कि "हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया?" मित्रो, इस में कोई संहेद नहीं, कि जिस समय यीशु क्रूस पर चढ़ाया गया था, तो उस वक्त परमेश्वर ने उसे, अर्थात अपने एकलौते पुत्र को

वास्तव में दुख उठाने और मरने के लिये छोड़ दिया था। एक अन्य स्थान पर पवित्र शास्त्र में लिखा है, कि परमेश्वर का हाथ ऐसा छोटा नहीं कि वह हमारा उद्धार न कर सके परन्तु हम अपने ही पापों के कारण अपने परमेश्वर से दूर और अलग हैं। (यशायाह ५९ : १, २)। और मित्रो, जिस समय यीशु परमेश्वर के होनहार के ज्ञान के अनुसार क्रूस पर चढ़ाया गया था, तो उस वक्त परमेश्वर ने हमें बचाने के लिए हमारे सब पापों को लेकर अपने पुत्र यीशु के ऊपर रख दिया था, ताकि वह हमारे पापों के प्रायश्चित के लिए मारा जाए। एक अन्य जगह पवित्र बाइबल में हम यों पढ़ते हैं कि "प्रेम इसमें नहीं, कि हम ने परमेश्वर से प्रेम किया, पर इस में है, कि उसने हम से प्रेम किया, और हमारे पापों के प्रायश्चित के लिए अपने पुत्र को भेजा।" (१ यूहन्ना ४ : १०)। सो जब यीशु क्रूस पर चढ़ाया गया था, और हम सब के पाप उसके ऊपर रख दिए गए थे, तो इस कारण परमेश्वर ने उसे वास्तव में छोड़ दिया था। सबसे पहले तो इसलिए क्योंकि परमेश्वर और पाप एक साथ नहीं रह सकते, और दूसरे, इसलिए क्योंकि यीशु को हमारे पापों का प्रायश्चित करने के लिए दुख उठाना अवश्य था।

परन्तु, फिर इसके आगे भविष्यद्वक्ता दाऊद उस सब कष्ट तथा अनुभव का वर्णन करता है जो प्रभु यीशु को क्रूस पर चढ़े हुए हुआ था। जैसे कि हम देखते हैं, कि वह कहता है, कि मैं तो मनुष्य नहीं परन्तु एक कीड़ा हूँ, और लोगों में मेरा अपमान होता है, वे लोग मेरा ठट्ठा करते हैं, और मुझे देखकर ओंठ बिचकाते और सिर हिलाते हैं, और कहते हैं कि अब तेरा परमेश्वर कहां है कि आकर तुझे बचा ले? मित्रो, अब यदि आप प्रभु यीशु के क्रूसारोहण के बारे में स्वयं पढ़ें तो आप यह देखकर आश्चर्य चकित रह जाएँगे कि ये सब बातें वास्तव में यीशु के ऊपर बीतीं। वह वास्तव में भूख, प्यास और मार के कारण एक कीड़े के समान बन चका था। उसका अपमान करने के लिये उन्होंने उस पर तरह-तरह से जुल्म ढाए, और उसके मुँह पर थूका और उसे

थप्पड़ और कोड़े मारे। और जब वह उस क्रूण पर चढ़ा हुआ अपनी अंतिम सांसें ले रहा था, तो नीचे लोगों की एक बहुत बड़ी भीड़ खड़ी हुई चिल्ला-चिल्लाकर कह रही थी कि "इस ने परमेश्वर पर भरोसा रखा है, यदि वह इसको चाहता है, तो अब इसे छुड़ा ले, क्योंकि इस ने कहा था, कि "मैं परमेश्वर का पुत्र हूँ"। (मत्ती २७ : ४३)। परन्तु मित्रो, यदि यीशु ऐसा चाहता और ऐसा करता तो हम देखते हैं, कि उसके जगत में आने का सारा उद्देश्य ही व्यर्थ प्रमाणित होता क्योंकि वह संसार में आया ही इसलिए था कि वह हमारे पापों के प्रायश्चित के लिए मारा जाए। सो हमें बचाने के लिए मसीह ने मार, अपमान और कष्ट, सब कुछ सह लिया।

जब मनुष्य को क्रूस के ऊपर चढ़ाया जाता था तो उसे क्रूस के साथ बाँधकर उसके हाथ पैरों को क्रूस के साथ कीलों द्वारा ठोंक दिया जाता था। इसीलिए वह कहता है, कि वे मेरे हाथ और पैर छेदते हैं। परन्तु जब उस क्रूस को खड़ा किया जाता था तो उस पर ठोके हुए मनुष्य के शरीर का ऊपरी भाग बोझ के कारण सामने की ओर लटक जाता था और इस प्रकार उसकी पसलियाँ वा हड्डियाँ दिखाई देने लगती थीं। इसीलिए, हम देखते हैं, कि वह कहता है, कि मेरी सब हड्डियों के जोड़ उखड़ गए और मैं अपनी सब हड्डियाँ गिन सकता हूं। और न केवल यह, परन्तु यीशु के क्रूसारोहण के वृत्तान्त में हम यह भी देखते हैं, कि जब रोमी सिपाही उसे क्रूस पर चढा चुके तो उन्होंने चिट्ठियाँ डालकर उसके कपड़े आपस में बाँट लिये। इसलिए भविष्यद्वक्ता कहता है, कि वे मेरे वस्त्र आपस में बाँटते हैं, और मेरे पहिरावे पर चिट्ठी डालते हैं।

मित्रो, मेरा यह पूर्ण विश्वास है, कि आज के इस पाठ से आप अवश्य ही यह देख सकते हैं कि बाइबल के लेखकों ने इसमें लिखी बातों को परमेश्वर की प्रेरणा के द्वारा ही लिखा है। और यह, कि परमेश्वर हम से प्रेम करता है और हमें बचाने के लिए उसने अपने पुत्र यीशु को हमारे पापों का प्रायश्चित ठहराया। और अब अन्त में, मैं आप से फिर यही कहना चाहूंगा, कि यदि आप अपने पापों से उद्धार प्राप्त करना चाहते हैं, तो पवित्र बाइबल की शिक्षानुसार आप को चाहिए कि आप यीशु मसीह में विश्वास करें, और अपने पापों से मन फिराकर उनकी क्षमा के लिए मसीह में बपतिस्मा लें।

परमेश्वर की दया और आशीष हम सब पर बनी रहे। ०००